ISSN NO. 0971-8443

बाल भारती

नवंबर 2019

मूल्य : ₹ 15

- लोकतंत्र पर गांधी जी के विचार
- जनता को साथ लेकर चलें : सरदार पटेल
- गुरु ग्रंथ साहिब

हमारे नए प्रकाशन

प्रकाशन विभाग

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार

सूचना भवन, सी जी ओ कॉम्प्लेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली -110003

ऑर्डर के लिए संपर्क करें :

फोन : 011-24367260, 24365610, ई-मेल : businesswng@gmail.com

हमारी पुस्तकें ऑनलाइन खरीदने के लिए कृपया www.bharatkosh.gov.in पर जाएं।

चुनिंदा ई-बुक एमेज़ॉन और गूगल प्ले पर उपलब्ध।

वेबसाइट : www.publicationsdivision.nic.in

फॉलो करें @ DPD_India

बच्चों की संपूर्ण पत्रिका

बाल भारती

1948 से प्रकाशित

वर्ष 71 : अंक : 6 पृष्ठ : 56 | कार्तिक-अग्रहायण 1941 | नवंबर 2019

लेख

लक्ष्मीबाई	अक्षय कुमार जैन	13
लोकतंत्र पर गांधी जी के विचार	यू.एस.मोहन राव	21
जनता को साथ लेकर चलें : सरदार पटेल	सरदार पटेल	27
प्रधानमंत्री ने स्वच्छ भारत को बापू और देश की जनता को समर्पित किया	---	34
गुरु ग्रंथ साहिब	महीप सिंह	39
भारतीय फिल्मों के पितामह : दादा साहेब फाल्के	मानस	49

कहानियां

हर बच्चा देश का	राज शेखर	6
मम्मी समझीं प्लास्टिक के नुकसान	माशा	10
रानी और लाल परी	सुरेशचंद्र रोहरा	18
जलपरी की दुनिया	बिन्दुविकास	25
लड़ाकी पड़ोसन	नासिरा शर्मा	36
चींचीं ने उड़ना सीखा	वीना सुखीजा	41
चुनमुन खरगोश और स्मार्ट फोन	शिवचरण चौहान	43
पुरस्कार	चांद 'दीपिका'	52

कविताएं

सद्दुआएं लीजे	बाबूराम शर्मा विभाकर	42
होगा विकास तभी	डॉ. रामनिवास 'मानव'	54

उपन्यास

पीटर पैन	45

महान कवि : महान कविताएं

काला कौआ	हरिवंशराय बच्चन	28
सबसे पहले	हरिवंशराय बच्चन	29

चित्रकथा	30-33

प्रधान संपादक : **राजेंद्र भट्ट**

वरिष्ठ संपादक : **आभा गौड़**

दूरभाष : 011-24362910

व्यापार व्यवस्थापक

ई-मेल : *pdjucir@gmail.com*

दूरभाष : 011-24367453

संयुक्त निदेशक (उत्पादन) : **वी. के. मीणा**

आवरण : **प्रज्ञा उपाध्याय**

चित्रांकन : **प्रज्ञा उपाध्याय, शिवानी**

ई-मेल : *balbharti1948@gmail.com*

वेबसाइट : *www.publicationsdivision.nic.in*

फेसबुक पेज : *www.facebook.com/publicationsdivision*

संपादकीय पत्र व्यवहार का पता :

संपादक 'बाल भारती', कमरा नं- 645, छठा तल, सूचना भवन, सी.जी.ओ. कॉम्प्लेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003

हमारी बात

मशहूर अंग्रेजी लेखक थे मार्क ट्वेन। एक बार की बात है, वह अपने दोस्त के साथ थे। बारिश थी कि खत्म होने का नाम ही नहीं ले रही थी। दोस्त ने कुछ झल्लाहट में कहा, "क्या ये बारिश कभी खत्म भी होगी?" मार्क ट्वेन का संक्षिप्त उत्तर था, "हमेशा हुई है, आज भी होगी।"

दुख के, अंधेरे के हर दौर में यही तो हमारी आस्था रहनी चाहिए- कि ये दौर जरूर खत्म होगा। अच्छा साहित्य, अच्छी किताबें-पत्रिकाएं इसी आस्था को तो मज़बूत करती हैं। अपनी 'बाल भारती' तो पिछले इकहत्तर सालों से अंधेरे से उजाले की राह दिखाने की कोशिश कर रही है- सपाट उपदेशों के जरिए नहीं, बल्कि मनभावन और प्रेरक कहानियों, कविताओं, लेखों, चित्रकथाओं के जरिए।

इकहत्तर साल की- पर बच्चों सी चुलबुली इस पत्रिका को तीन पीढ़ियों का साथ मिला है। यह दादाजी-नानाजी के बचपन की भी पत्रिका है, मां-मौसी की थी और भैया-भाभी की भी। इसके प्रथम संपादक थे, देवेन्द्र सत्यार्थी, बड़ा विराट, बड़ा निर्दोष, बड़ा प्यारा व्यक्तित्व था उनका बड़े विद्वान, पर एकदम बच्चों जैसे निर्मल-निश्छल। उन्होंने भारत के कोने-कोने से लोकगीतों का संग्रह किया, कविताएं-कहानियां और बड़े रोचक संस्मरण लिखे और 'बाल भारती' को भी अपनी प्रतिभा से खूब सजाया-संवारा।

पिछले सात दशकों में हिंदी, बल्कि उर्दू-पंजाबी और अन्य भाषाओं के प्रतिष्ठित लेखकों की रचनाओं ने बाल भारती को संवारा। नाम देंगे तो सूची से ही पृष्ठ भर जाएंगे। प्रतिभाशाली संपादकों ने मन लगाकर इस पत्रिका को सजाया-संवारा। अपनी खूबियां इसे सौंपी। तभी तो सात दशकों से शायद सबसे ज्यादा समय से यह अपने भारत के बच्चों की प्रिय पत्रिका रही है।

इस सुंदर, चुलबुली समझदार पत्रिका को थोड़े वक्त संभालने का मौका मुझे भी मिला। यों तो आभा जैसी मेहनती सहयोगी के होने से मेरा काम काफी आसान रहा फिर भी हर संपादक का कोई प्रिय क्षेत्र होता है। कोई बड़ी तमन्ना होती है। मेरी भी है, और तुमसे विदा लेते समय तुमसे साझा कर रहा हूं।

मैं चाहता हूं कि खूब विज्ञान पढ़ो-समझो; और इससे भी बढ़कर वैज्ञानिक मनोवृत्ति विकसित करो। इसको विस्तार से तो अपने प्रिय मास्टरजी या मास्टराइन जी से समझना; पर सरसरी तौर पर यह, कि किसी भी तथ्य को अपनाने-सच मान लेने से पहले उसे पढ़ाई, तर्क और विवेक से जरूर जांच लो। कोई तथ्य सामने आए तो उसे, उसकी मूल पुस्तक-मूल स्रोत से पुष्ट करने की कोशिश करो, जैसे वैज्ञानिक पहले पूरी जांच-परख, निरीक्षण के बाद किसी निष्कर्ष पर पहुंचते हैं, वैसा ही हम सब अपने जीवन में अपनाएं।

हर नई पीढ़ी पुरानी पीढ़ी से ज्यादा समझदार होती है। मुझे उम्मीद है तुम सभी समझदार बच्चे जो बाल भारती पढ़कर और भी समझदार हो गए हो- मेरी इच्छा ज़रूर पूरी करोगे। जीवन में सच्चाई और विवेक हमेशा तुम्हारे साथ रहें- यही मेरी शुभकामना है।

आपका - राजेन्द्र भट्ट

आपकी बात

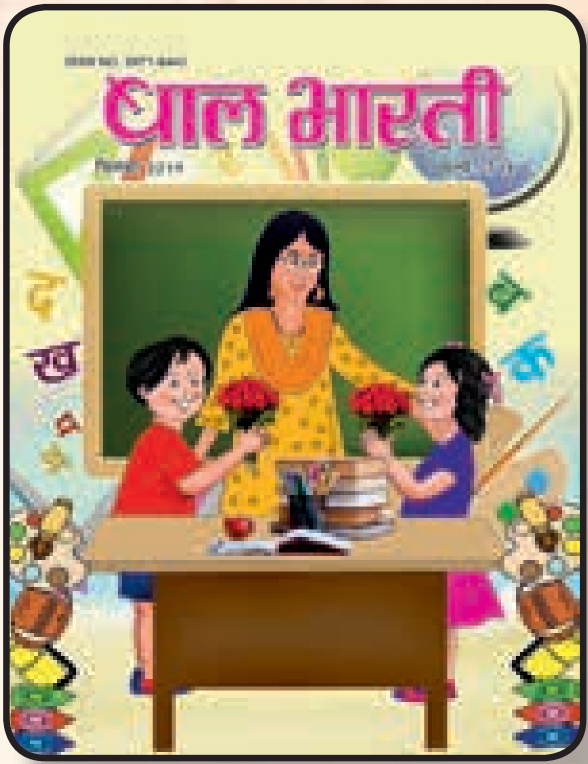

हर बार की तरह मैंने इस बार भी *बाल भारती* पढ़ी। सितंबर अंक में बहुत सी ज्ञानवर्द्धक बातें थीं। मुझे यह अंक पढ़कर बहुत अच्छा लगा क्योंकि, *बाल भारती* से मुझे हर बार एक नए विषय के बारे में जानकारी मिलती है। *बाल भारती* बच्चों के लिए ज्ञान प्राप्ति का एक बहुत अच्छा माध्यम है। इस अंक के प्रकाशित लेखों में *शहीद भगत सिंह अदालत में, मिठाई की चोरी, बत्ती बंद* और *गुरु नानक देव* अच्छी लगी। कहानियों में *कैफ की तिजोरी, बच्चों का गीत* और *तीन-तीन राजा* बहुत पसंद आई। कविताओं में *आओ बादल भैया* बहुत अच्छा लगी। *बाल भारती* को हार्दिक शुभकामनाएं।

–निहारिका, जलगांव

बाल भारती सितंबर 2019 का अंक पढ़ा इस अंक ने मुझे बेहद प्रभावित किया। पूरी पत्रिका पढ़ने के बाद मैंने जाना कि यह एक ऐसी पत्रिका है जो बच्चों के विकास एवं उनका उचित मार्गदर्शन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इस पत्रिका में बच्चों के लिए हर विषय से संबंधित सामग्री मौजूद है। बच्चों का मनोरंजन करने के लिए रंग-बिरंगी कहानियां तथा नई-नई कविताएं गुनगुनाने के लिए मिलती हैं। इसी तरह जानकारी के रूप में अनेक विषयों जैसे विज्ञान, देश-विदेश, सभ्यता-संस्कृति आदि से संबंधित लेख भी इसमें मौजूद हैं। निश्चित रूप से ऐसे लेख जो बच्चों की जानकारी बढ़ाते हैं, वहीं बच्चों का मार्गदर्शन भी करते हैं। दिमागी कसरत के लिए पत्रिका में खेल क्विज, पहेली भी शामिल करें। इस अंक में प्रकाशित *सफर पर निकला चंद्रयान-2, गुरु नानक देव,* और *शहीद भगत सिंह* मुझे पसंद आए। कहानियों में *बच्चों के गीत, मन भर जलेबी* और *जन सुनवाई* अच्छी लगी। इस पत्रिका में प्रकाशित कविताएं मुझे विशेष पसंद हैं हर महीने पढ़ने के लिए नए-नए कविताएं मिल जाती हैं। कुल मिलाकर कहा जाए तो बच्चों का व्यक्तित्व संवारने के लिए इस पत्रिका की जितनी भी प्रशंसा की जाए, कम है। भविष्य में इस पत्रिका से और भी बच्चे जुड़ें और यह और भी बेहतर बने, यही मेरी शुभकामनाएं हैं।

–अमृता, अमृतसर, पंजाब

बाल पाठकों से निवेदन है कि पत्रिका में प्रकाशित सामग्री के विषय में अपनी प्रतिक्रिया हमें भेजें।
आप हमें ई-मेल balbharti1948@gmail.com पर भी अपनी प्रतिक्रिया भेज सकते हैं। लेखकों से निवेदन है कि वे रचना के साथ अपना पता, ई-मेल, फोन नंबर, अवश्य भेजें। रचना की छायाप्रति अपने पास रखें। अस्वीकृत रचनाएं लौटाई नहीं जाएंगी।

हर बच्चा देश का

–राज शेखर

भाग-दौड़ भरी जिंदगी वाला यह नगर। और इनके असंख्य चौराहे; जो इस बात के गवाह हैं कि यहां के लोग अपने-अपने कामों में कितने व्यस्त हैं। किसी को किसी की परवाह नहीं या दूसरे के लिए वक्त नहीं।

उन्हीं चौराहों पर सैकड़ों बच्चे रोजाना विद्यालय न जाकर इकट्ठे हो जाते हैं किसी न किसी मकसद से। कोई कलम बेच रहा है, कोई फूल बेच रहा है, तो कोई भीख मांग रहा है, पर क्यों? ये बच्चे कौन हैं? ये सुबह-सुबह कहां से जमा हो जाते हैं? शायद उन चौराहों को छोड़कर पूरे नगर को खबर नहीं है।

आज उन्हीं चौराहों पर बड़े-बड़े बैनर लगे हैं, जिन पर विश्व बाल अधिकार दिवस लिखा है। यह दिवस प्रत्येक वर्ष 20 नवंबर को मनाया जाता है। उद्देश्य स्पष्ट है कि लोगों को बच्चों के प्रति अतिसंवेदनशील बनाया जा सके।

इसी नगर के चौराहे के करीब स्कूल का एक प्रांगण। जहां बाल अधिकार दिवस पर मुख्य अतिथि के रूप में एक बड़े अधिकारी आए हैं। कहते हैं कि उन्होंने पूरे देश भर में बच्चों के लिए एक मुहिम छेड़ रखी है। उन्होंने इसके लिए एक संस्था बनायी है, जिसका स्लोगन है- 'हर बच्चा देश का।' उनकी इस मुहिम को जबरदस्त सफलता मिली है।

जब वह मंच पर बोलने आए तब बच्चों और वहां उपस्थित अविभावकों की तालियों से पूरा वातावरण गूंज उठा। उन्होंने कहा-

"आज हमें केवल एक दिन के लिए बच्चों के अधिकार की बात नहीं करनी है, बल्कि एक संकल्प लेना है कि जब तक सभी बच्चों को उनका हक न मिल जाए तब तक चैन से नहीं बैठना है। बच्चों की कानूनी सुरक्षा, देख-भाल और संरक्षण करना बहुत जरूरी है। समस्या बहुत बड़ी है। इसलिए सभी का सहयोग होना जरूरी है।"

"हम प्रायः बच्चों को कल का भविष्य कहते हैं। इसलिए उनके सम्पूर्ण विकास के लिए घर और समाज का वातावरण अच्छा होना चाहिए। सरकार ने बच्चों की सम्पूर्ण सुरक्षा के लिए 'बाल अधिकार कानून' बनाए हैं। अतः सर्वप्रथम यह सुनिश्चित होना चाहिए कि लोग कानून का पालन करें।"

"भारतीय संविधान ने सभी बच्चों के लिए कुछ अधिकार निश्चित किए हैं। 6-14 वर्ष के बच्चों के लिए अनिवार्य और निःशुल्क प्रारंभिक शिक्षा का अधिकार दिया गया है। 14 वर्ष से कम आयु के बच्चों को किसी भी जोखिम भरे कार्यों से सुरक्षा मिली है। इस उम्र में उनसे कोई जबरन आर्थिक कार्य भी नहीं करा सकता।"

"पूरे देश में बच्चों के विकास से संबंधित योजना को फैलाना और लोगों को उसके प्रति जागरूक करना अत्यावश्यक है। 18 वर्ष से कम उम्र के बच्चों के विकास में माता-पिता को सहयोग के साथ उन्हें सजग भी करना है।"

"भारत सरकार द्वारा बाल अधिकारों की रक्षा के लिए कई नीतिगत कदम उठाए गए हैं। जैसेः बाल संरक्षण अधिनियम 2005, बाल विवाह प्रतिबंध अधिनियम 2006, राष्ट्रीय बाल अधिनियम 2013 आदि। हाल के दिनों में 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' योजना तथा 'किशोर न्याय अधिनियम' 2015 उल्लेखनीय हैं। बच्चों के विकास के लिए समय-समय पर लाए ये अधिनियम महत्वपूर्ण हैं, लेकिन उनके माता-पिता की समस्याओं को दूर किए बिना बच्चों का उचित विकास हो पाना आसान नहीं है।"

उन्होंने एक बच्चे की कहानी सुनाई, जिसका नाम किशन था। वह शहर के एक चौराहे पर किताब और पत्रिका बेचा करता था। शायद कहीं दूर छोटे शहर से उसका संबंध रहा हो। उसे बहुत दिनों तक सिर्फ यह याद था कि कोई व्यक्ति उसे मिठाई का लालच देकर कहीं ले गया, जहां ढेर सारे बच्चे थे। वह फैक्ट्री थी और बच्चे वहां दियासलाई बनाने का काम किया करते थे। एक बार वहां पुलिस ने छापा मारा और सभी बच्चों को वहां से भगा दिया गया। उस समय वह 8 साल का था। उनमें से बड़ा बच्चा रवि 16 साल का था और वही सबका लीडर बन गया। किशन भी उसी के लिए काम करता था।

दो-तीन साल में उसने हजारों लोगों को किताबें बेची। किसी ने सहानुभूति दिखाने के लिए लिया। किसी ने इच्छा से लिया तो किसी ने डांट भी दिया। लेकिन इतने दिनों में वह भी व्यवसाय का उसूल समझ चुका था कि ग्राहक भगवान होते हैं। इसलिए वह बुरा नहीं मानता था।

एक दिन उससे एक व्यक्ति ने पूछा- "बेटा! क्या नाम है तुम्हारा? क्या तुम स्कूल जाते हो?" वह कार में बैठा था। उसके साथ एक महिला और उसी की उम्र की एक लड़की भी बैठी थी। वे सभी उसे देख रहे थे। किशन को तो स्कूल के बारे में कुछ पता ही नहीं था। वह केवल अपना नाम बता पाया। उस व्यक्ति ने फिर पूछा- "क्या तुम स्कूल जाओगे?" किशन बिना कुछ बताए वहां से चला गया।

बाद में उसने रवि से पूछा- "स्कूल में क्या होता है?"

"वहां बच्चे पढ़ाई करते हैं।" रवि ने बताया।

"पढ़ाई क्यों करते हैं?"

"बड़ा आदमी बनना है तो पढ़ाई करनी पड़ती है।"

"क्या हम लोग बड़े आदमी नहीं बन सकते?"

"ये सब छोड़। काम पर ध्यान दे। हमें कौन पढ़ाएगा?"

उस दिन रात भर किशन को नींद नहीं आई। वह यही सोचता रहा कि यदि वह अपने माता-पिता के पास होता तो आज वह भी

पढ़ाई करता। पर उसे तो पता ही नहीं था कि उसके माता-पिता कौन हैं?

जब वह दूसरे दिन अपने काम पर निकला तो उसका मन अब काम में नहीं लग रहा था। उसे लग रहा था कि सभी उससे यही पूछ रहे हैं कि बेटा! तुम स्कूल जाते हो? क्या तुम स्कूल जाओगे? वह एक पेड़ के नीचे बैठ गया। वह अपने बैग में रखी सभी किताबों के पन्नों को एक-एक कर पलटने लगा। उसे कुछ भी समझ में नहीं आया। उसने आस-पास देखा। तभी अचानक उसे अखबार बेचने वाले मयंक चाचा की याद आयी। उसने अक्सर उन्हें अखबार पढ़ते देखा था। वह उनके पास गया।

"मयंक चाचा! क्या तुम मुझे पढ़ना सिखाओगे?"

"किशन! तुम पढ़कर क्या करोगे?"

"मैं भी पढ़कर बड़ा आदमी बनना चाहता हूं।" किशन ने कहा।

"बेटा! यह तो अच्छी बात है। लेकिन तुम पढ़ोगे कैसे? इसके लिए तो यह काम भी छोड़ना पड़ेगा। स्कूल जाना होगा; फिर तुम्हें पढ़ने के लिए पैसे कौन देगा?"

"क्या मैं दोनों काम एक साथ नहीं कर सकता हूं? किताब भी बेचूंगा और पढ़ूंगा भी। तुम थोड़ा-थोड़ा मुझे बता दिया करना।"

"मैंने कौन-सी बहुत पढ़ाई की है। मैं तो थोड़ा लिख-पढ़ सकता हूं।"

"मुझे भी चाचा! इतना ही बता दो। मैं भी कुछ सीख लूंगा।"

उस घटना के एक साल हो गए। अब किशन लिख और पढ़ सकता था। लेकिन स्कूल जाने की तमन्ना उसकी पूरी नहीं हो पायी थी।

अचानक एक दिन किसी ने किशन को उसके नाम से बुलाया। किशन ने देखा- वह तो वही आदमी है जिसके कारण वह पढ़ने लगा था। वह दौड़ते हुए उनके पास गया। उसे लगा कि कोई अपना उसे बुला रहा है। उसे आजतक इतना अपनापन महसूस भी तो नहीं हुआ था।

उनसे मिलते ही उसने बताना शुरू कर दिया कि वह अब लिख-पढ़ सकता है। पर स्कूल नहीं जा सकता। वह व्यक्ति बड़े ध्यान से उसकी बातें सुन रहा था। उसने कहा-

''किशन! तुम मेरे साथ मेरे घर पर चलो। तुम वहीं रहकर पढ़ाई करना। तुम्हारा नाम भी स्कूल में लिखवा दूंगा।'' यह सुनकर किशन असमंजस में पड़ गया। उसने कहा- ''चलिए! आपको मयंक चाचा से मिलवाता हूं।''

दोनों मयंक चाचा के पास गए। किशन ने बताया कि वह इस अंकल के साथ उनके घर जा रहा है। मयंक चाचा ने कहा- ''यह तो बहुत अच्छी बात है किशन। अब तो तुम खूब मेहनत से पढ़ना और बड़ा आदमी बनना। जाओ जाकर अपना सामान ले आओ।''

किशन वहां से चला गया। उस व्यक्ति ने मयंक चाचा से किशन के बारे में पूछा कि वह कौन है और यहां कैसे आया? मयंक चाचा ने बताया- ''किसी अच्छे घर से ही है। शायद बच्चा चुराने वाले गिरोह ने उसे उसके शहर से उठा लिया था।'' ये सारी बातें हो ही रही थीं कि किशन आ गया।

किशन उनके घर गया। घर बहुत बड़ा था। वहां केवल तीन लोग थे। पति, पत्नी और उनकी लड़की। एक और मेहमान था- एक प्यारा सा कुत्ता, जिसका नाम मिशका था। कुत्ते को देखकर पहले तो वह डर गया। लेकिन कुछ देर में उससे उसकी दोस्ती भी हो गई।

उन लोगों ने किशन को कानूनन गोद लिया। उसे अपना बेटा बनाया। शुरू में तो किशन घर में सहमा-सहमा रहता था, लेकिन बाद में वह सबसे घुलमिल गया। स्कूल जाना शुरू कर दिया। अब वह उन्हें मम्मी-डैडी बुलाता था।

उस बच्चे ने अपने मां-बाप को कभी निराश नहीं किया। शुरुआत में उसे स्कूल में परेशानी हुई, लेकिन उसके बाद उसने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। उसने हमेशा स्कूल में अव्वल स्थान प्राप्त किया। बाद में वह प्रशासनिक अधिकारी बना। आप जानना चाहेंगे, वह लड़का कौन है? सभी लोग यह जानने को उत्सुक हुए। उन्होंने आगे बताया।

वह लड़का मैं ही हूं- कृष्ण कुमार यदि उन्होंने मुझे न अपनाया होता तो मुझे यह नया जीवन नहीं मिलता। मैं भारत के सभी नागरिकों से अनुरोध करता हूं कि वे जरूरतमंद बच्चों की मदद करें और उन्हें उनका सपना पूरा करने में सहयोग करें।

भारत में हर आठ मिनट में एक बच्चा गुम हो जाता है। उनमें से आधे बच्चे नहीं मिल पाते। जहां कहीं भी सार्वजनिक क्षेत्रों में ऐसे बच्चों को देखें; उन्हें नजरअंदाज न करें। उनके माता-पिता के बारे में जानने की कोशिश करें। हो सकता है कि हमारा एक छोटा-सा प्रयास उन बच्चों को उनके माता-पिता से मिला दे। आप उन बच्चों के फोटो भी देखे गए जगह के साथ शेयर कर सकते हैं। इसके लिए आप स्वयं सोशल मीडिया का इस्तेमाल कर सकते हैं। आप मुझे जानकारी दीजिए। हमारी संस्था को इसके बारे में बताइए। हम लोगों ने कई बच्चों को उनके माता-पिता से मिलवाने में सफलता प्राप्त की है। हमारे इस मिशन में कई बच्चे भी जुड़े हुए हैं।

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि मैंने अपने मां-पिताजी को भी ढूंढ निकाला है। अब मेरे दो-दो मां-पिताजी मेरे साथ रहते हैं। आप लोगों से मेरा एक ही संकल्प लेने का आग्रह है- हर बच्चा देश का। जय हिन्द! ❑

–एच. 1103,
टी. एन. ए. आई. एस. हाउसिंग
काम्पलेक्स, वेस्ट नटेशन
नगर, विरूगमबाकम, चेन्नई,
तमिलनाडु-600092

मम्मी समझीं प्लास्टिक के नुकसान

—माशा

आज मम्मी की डांट मुझे बिल्कुल अच्छी नहीं लगी। मैं जानता हूं कि वह दफ्तर से थककर वापस आती हैं। फिर खाना पकाती हैं और हमारे कमरे संभालती हैं। बृहस्पतिवार को उन्हें यह सब करके सब्जी मार्केट भी जाना पड़ता है। आज भी यही कुछ हुआ। मम्मी के साथ मैं भी हमेशा की तरह सब्जी मार्केट गया। वहां मम्मी ने बेवजह मुझे डांट दिया। आखिर मैंने उन्हें कहा ही क्या था... यही ना कि सब्जी वालों से प्लास्टिक के बैग मत लो। सारी सब्जी कपड़े के बैग में भर लो। घर पर आकर मैं ही उन सब्जियों को छांट लूंगा। फिर भी मम्मी ने हरा धनिया प्लास्टिक के बैग में रखवाया और सबके सामने मुझे झिड़क दिया। मैंने सिर्फ इतना कहा था कि प्लास्टिक का इस्तेमाल न करने से हमारा भविष्य ही सुरक्षित होगा।

उस दिन प्रधानमंत्री जी ने टीवी पर कहा था कि स्वच्छता ही सेवा है। इस साल इस जागरूकता अभियान में प्लास्टिक मुक्त भारत का सपना देखा गया है। वैसे प्रधानमंत्री जी न भी कहते तो भी हमें खुद सोचना चाहिए। प्लास्टिक किस तरह पूरे पर्यावरण को नुकसान पहुंचाता है। प्लास्टिक एक बहुत बड़ा खतरा बनकर उभर रहा है। हम दिन की शुरुआत से रात को बिस्तर में जाने तक प्लास्टिक का इस्तेमाल करते हैं। सुबह टूथब्रश करना हो, या स्कूल का टिफिन और पानी की बोतल, सभी प्लास्टिक के बने होते हैं। हम लोग बच्चे के जन्म से ही उसे प्लास्टिक थमा देते हैं। उसके निपल और डायपर में भी प्लास्टिक का इस्तेमाल किया जाता है।

पूरी दुनिया में प्लास्टिक का इस्तेमाल बढ़ चुका है। हर साल पूरी दुनिया में इतना प्लास्टिक फेंका जाता है जिससे पूरी पृथ्वी के चार घेरे बन जाएं। मैंने कहीं यह डेटा पढ़ा था कि पृथ्वी पर 903 करोड़ टन प्लास्टिक मौजूद है। यह 6 करोड़ जंबो जेट के बराबर है। इनसे दुबई के बुर्ज खलीफा जैसी 19 हजार इमारतें बनाई जा सकती हैं। इसके उत्पादन में पूरी दुनिया के कुल तेल का आठ प्रतिशत खर्च हो जाता है। प्लास्टिक के थैले बहुत जहरीले रसायनों से मिलकर बनते हैं। इन्हें बनाने में जायलेन, इथिलेन ऑक्साइड और

बेंजेन जैसे रसायनों का इस्तेमाल होता है। इन रसायनों से बहुत तरह की बीमारियां हो सकती हैं जो मनुष्यों, जानवरों, पौधों सभी को समान रूप से प्रभावित करती हैं।

हमारी विज्ञान की टीचर भारती मैम कहती हैं कि प्लास्टिक नॉन बायोडिग्रेडेबल होता है। नॉन बायोडिग्रेडेबल ऐसे पदार्थ होते हैं जो बैक्टीरिया द्वारा नष्ट नहीं किए जा सकते। इससे पर्यावरण को बहुत नुकसान होता है। कचरे की साइकिलिंग बहुत जरूरी है क्योंकि प्लास्टिक का एक छोटा सा थैला भी छोटे पार्टिकल्स में बहुत आसानी से और जल्दी तब्दील नहीं होता। हजारों साल बाद भी उसके जस के तस रहने की उम्मीद होती है। अगर हम उसे जमीन में गाड़ते हैं तो वह पानी के स्रोतों में जा मिलता है। कचरे को समुद्र और नदियों में फेंकना भी जल प्रदूषण पैदा करता है। अगर हम उसे जलाते हैं तो भी उससे खतरनाक रसायन बाहर निकलते हैं। यह सांस के साथ शरीर में पहुंचते हैं। इसीलिए प्लास्टिक के थैलों को जमीन में फेंका या गाड़ा जाए, जलाया जाए या पानी में फेंक दिया जाए, उसके हानिकारक प्रभाव कम नहीं होते।

बहुत सारे लोग सिंगल यूज प्लास्टिक की बात भी करते हैं। जैसे प्लास्टिक की थैलियां, प्याले, प्लेट, छोटी बोतलें, स्ट्रॉ और कुछ पाउच/सिंगल यूज प्लास्टिक दोबारा इस्तेमाल के लायक नहीं होते। इसके बाद इन्हें फेंक दिया जाता है। इनमें से आधे से ज्यादा पेट्रोलियम आधारित उत्पाद होते हैं। इनके उत्पादन पर खर्च बहुत कम आता है। यही वजह है कि रोजाना के कामकाज में इसका इस्तेमाल खूब होता है। उत्पादन पर इसके भले ही कम खर्च हो लेकिन फेंके गए प्लास्टिक के कचरे, उसकी सफाई और उपचार पर काफी खर्च होता है। ऐसे प्लास्टिक में जो रसायन होते हैं, उनका इंसान और पर्यावरण पर काफी बुरा असर पड़ता है। प्लास्टिक की वजह से मिट्टी का कटाव काफी होता है। इसके अंदर का रसायन बारिश के पानी के साथ जल स्रोतों में भर जाता है, जो काफी खतरनाक है।

ऐसा नहीं है कि लोग इसके प्रति जागरूक नहीं। प्लास्टिक के दूसरे बेहतर उपयोग किए जा रहे हैं। दुनिया के कई हिस्सों में अनुपयोगी प्लास्टिक कचरे से सड़कें बनाई जा रही हैं। ईरान में प्लास्टिक को छोटे टुकड़ों में तोड़कर उन्हें कंक्रीट के तौर पर इस्तेमाल किया जा रहा है और पत्थरों की कमी की दूर किया जा रहा है। मैंने अखबारों में पढ़ा है कि हमारे देश में केरल राज्य के एलुवा रेलवे स्टेशन पर प्लास्टिक की खाली बोतलों से वर्टिकल गार्डन बनाया गया है।

मम्मी ने सब्जी मार्केट में नाराज होकर मुझसे पूछा था– "तो तुम बताओ कि प्लास्टिक के इस्तेमाल को हम कैसे रोक सकते हैं?" मैं जानता हूं कि यह कैसे किया जा सकता है। सबसे पहले तो ऐसे प्लास्टिक के

सामान का इस्तेमाल करने से बचना चाहिए जिसे एक बार इस्तेमाल करके फेंकना होता है। मिट्टी के परंपरागत बर्तनों का इस्तेमाल अधिक से अधिक करना चाहिए। प्लास्टिक का इस्तेमाल करना ही हो तो उसके पीईटीई और एचडीपीई प्रकार के थैले चुनने चाहिए। ये प्लास्टिक आसानी से रीसाइकिल हो जाते हैं।

हम पानी की प्लास्टिक की बोतलों की जगह मिट्टी का घड़ा या सुराही रख सकते हैं। प्लास्टिक के थैलों की जगह कपड़े, कागज या जूट के थैले इस्तेमाल कर सकते हैं। इन्हें गंदा होने पर आसानी से धोया जा सकता है। स्कूल, ऑफिस या कॉलेज के लिए मग या स्टील, तांबे गिलास खरीद सकते हैं। माइक्रोवेव के अंदर खाना गर्म करने के लिए कांच के बर्तन इस्तेमाल करने चाहिए। डिब्बाबंद खाने की बजाय ताजा खाना खाने से प्लास्टिक के इस्तेमाल को कम किया जा सकता है। तेल, मसाले, अनाज वगैरह प्लास्टिक के डिब्बों में रखने की बजाय कांच या सिरेमिक के जार में रखना चाहिए। भले थोड़े पैसे ज्यादा खर्च हों लेकिन इससे हमारी सेहत को नुकसान नहीं होगा।

मेरी प्यारी डायरी! अगर हम ऐसे काम करेंगे तो पर्यावरण को नुकसान होने से बचा सकते हैं। भारती मैम ने उस दिन कहा था कि हमें सबसे पहले अपने घर से शुरुआत करनी चाहिए। मैं भी यही करने की कोशिश कर रहा हूं। मैम का कहना है कि आदत बदलने में समय लगेगा। इसलिए मैं मम्मी पर नाराज नहीं हुआ। मैं जानता हूं कि मम्मी यह सब जल्दी समझ जाएंगी। समझ भी रही हैं। वह पापा से कह रही थीं कि उन्होंने ऑनलाइन जूट और कपड़े के कई थैले खरीदे हैं। जल्द ही वे बैग्स डिलीवर हो जाएंगे। मैं खुश हूं कि धीरे-धीरे अपने परिवार को मैं बदलने में कामयाब हो रहा हूं।

गुडनाइट मेरी प्यारी डायरी

विभु ❑

–ए-29, दैनिक जनयुग अपार्टमेंट्स, वसुंधरा इन्क्लेव, नई दिल्ली-110096

चित्र बनाओ प्रतियोगिता

(जनवरी, 2020)

बाल भारती का लोकप्रिय कॉलम 'चित्र बनाओ प्रतियोगिता' पाठकों की मांग पर पुन: आरंभ किया गया है। इस कूपन के साथ 30 नवंबर, 2019 तक *'गणतंत्र दिवस'* पर आधारित एक आकर्षक चित्र बनाकर हमारे पास भेजें। पुरस्कृत तथा सराहनीय चित्रों को *बाल भारती* में प्रकाशित किया जाएगा। प्रथम विजेता को एक वर्ष तक हमारी ओर से *बाल भारती* की मुफ्त सदस्यता दी जाएगी।

नाम ....

आयु ....

पता ....

....

....

इस प्रतियोगिता में 16 वर्ष तक के बच्चे ही भाग ले सकते हैं।

लक्ष्मीबाई

—अक्षय कुमार जैन

चिम्मन जी अप्पा पेशवा के साथ जो लोग उस समय बनारस में रह रहे थे, उनमें एक थे श्री मोरोपंत ताम्बे और उनकी सहधर्मिणी भागीरथीबाई। कौन जानता था कि भागीरथीबाई की कोख से जन्म लेने वाली छोटी-सी कन्या मनु भारत के इतिहास की महारानी लक्ष्मीबाई के नाम से सुप्रसिद्ध वीरांगना बन जाएगी। बनारस में 1935 में मनु का जन्म हुआ। किंतु जब मनु तीन-चार वर्ष की हुई तो उसका परिवार ब्रह्मावर्त में बाजीराव के दरबार में चला गया, जहां मनु से ग्यारह वर्ष बड़े नाना साहब के साथ खेलने का उसे सुयोग प्राप्त हो गया।

मनु सबको प्रिय थी इसलिए लोग उसे 'छबीली' कहकर संबोधित करते थे। अल्पायु में ही उसने तलवार चलाने और घुड़सवारी करने आदि का अभ्यास कर लिया। जब पेशवा नाना साहब और उनके चचेरे भाई राव साहब को उनके अध्यापक पढ़ाते थे तो छबीली पास ही बैठी हृदयंगम करती थी। इस प्रकार बचपन से ही उसकी शिक्षा-दीक्षा ऐसी हुई जो भविष्य में बड़ी लाभकारी सिद्ध हुई।

जब छबीली आठ-नौ वर्ष की थी, उसका पाणिग्रहण झांसी के महाराजा गंगाधरराव के साथ हो गया और तभी वह हठीली मनु महारानी लक्ष्मीबाई बनी। उसका दांपत्य जीवन बहुत सुखी रहा। किंतु देव को कुछ और ही करना था। 1853 में गंगाधरराव की मृत्यु हो गई। महारानी को कुल 18 वर्ष की आयु में शासन का समस्त भार उठाने को बाध्य होना पड़ा। पति की मृत्यु के बाद ही महारानी ने दामोदरराव को गोद ले लिया। किंतु उस समय ईस्ट इंडिया कंपनी का गवर्नर जनरल डलहौजी था जिसकी राज्यों को जब्त करने की नीति जोरों से चल रही थी। अतः अंग्रेजों ने दामोदरराव को झांसी का उत्तराधिकारी स्वीकार नहीं किया और राज्य पर अधिकार कर लेने का फैसला कर लिया। किंतु झांसी में उस समय नाना की मुंह बोली बहन छबीली राज्य कर रही थी। झांसी पर अधिकार कर लेना हंसी-खेल न था।

अंग्रेजों के व्यवहार से असंतुष्ट देश में स्वतंत्रता की लहर चल रही थी। धीरे-धीरे यहां के अंग्रेज भी उसका अनुभव करने लगे थे। छिपे-छिपे फिरंगियों के विरुद्ध विद्रोह करने के लिए चारों ओर तैयारियां हो रही थीं। मुगल बादशाह का राज्य होते हुए भी सेना के बलबूते पर अंग्रेज राज कर रहे थे। किसी का साहस न होता था कि वह खुलेआम कुछ कहे, किंतु दिलों में नश्तर चुभे हुए

थे। विशेषकर डलहौजी के जब्ती सिद्धांत से विभिन्न राजा-महाराजा भी असंतुष्ट थे। अतः यह निश्चय किया गया कि 31 मई, 1857 को देशभर की छावनियों में विद्रोह किया जाए। पर मेरठ में सैनिकों में स्वाधीन होने का अदम्य उत्साह रोके न रुका। वहां पर 10 मई को रविवार के दिन जब कि बड़े अंग्रेज अफसर गिरजाघर आए हुए थे, विद्रोह हो गया। विद्रोह धीरे-धीरे दिल्ली की ओर बढ़ा और जून मास में यह दशा हो गई कि पंजाब से लेकर बंगाल तक समस्त उत्तर भारत में सैनिक विद्रोह फैल गया। उसे खाली सिपाहियों का गदर कहना नितांत भूल होगी। वह स्वतंत्रता का संग्राम था जो किसी योजना के आधार पर हुआ था।

दिल्ली के मुगल सम्राट बहादुरशाह ने एक पत्र भारत के राजा-महाराजाओं के नाम लिखा जिसमें फिरंगियों से मुक्त होने का आह्वान किया गया और प्रमुख नरेशों को भारत के शासन की बागडोर संभालने के लिए आमंत्रण दिया गया था।

उन दिनों नाना साहब के नेतृत्व में 4 जून को कानपुर में अंग्रेजों से सत्ता हथियाने के लिए विद्रोह हो गया। उसी दिन लक्ष्मीबाई की झांसी में भी विद्रोह की आग भड़क उठी। झांसी के ब्रिटिश कमिश्नर के हाथ कुछ ऐसे कागज पड़ गए जिनसे यह स्पष्ट हो गया कि रानी का एक सहयोगी लक्ष्मणराव विद्रोह की योजना बना रहा है। अंग्रेज अभी सोच ही रहे थे कि क्या किया जाए कि इतने में क्रांतिकारियों ने किले पर अधिकार कर लिया। इसे देखकर अंग्रेज नगर के किले में शरणागत हो गए। 7 जून को झांसी के किले पर क्रांतिकारियों का झंडा फहरा दिया गया। उधर अंग्रेजों ने सफेद झंडा सुलह की आकांक्षा से लगाया।

8 जून को झांसी के रिसालदार काले खां ने आदेश दिया कि फिरंगियों ने महारानी लक्ष्मीबाई को गद्दी से गलत तरीके से हटाया है, क्योंकि दामोदरराव बालक है अतः रानी उसकी संरक्षिका की हैसियत से झांसी की शासिका रहेगी। घोषणा की गई- "संसार परमेश्वर का है, देश सम्राट का है, और झांसी की रानी लक्ष्मीबाई है।"

अब रानी ने राज्य की व्यवस्था की ओर ध्यान देना शुरू किया। रानी का दैनिक कार्यक्रम इस प्रकार था- प्रातः पांच बजे उठकर

वह स्नान करतीं और स्वच्छ सफेद चंदेरी साड़ी पहनकर पूजा करतीं। तुलसी का पूजन होता। फिर दरबारी संगीतज्ञ भजन गाते और पार्थिव पूजा की जाती। तदनंतर पुराणिक लोग पुराण पढ़कर सुनाते। तब सरकारी तथा अन्य राज्य कर्मचारी आते और वह उनके अभिवादन स्वीकार करतीं। स्मरणशक्ति उनकी इतनी तीव्र थी कि 750 व्यक्तियों में से जो भी न आता अगले दिन प्रात: वह उसकी अनुपस्थिति का कारण पूछना न भूलती।

इसके बाद भोजन होता था। यदि कोई आवश्यक कार्य न होता था तो रानी एक घंटा विश्राम करतीं। प्रात:काल भेंट में आई वस्तुएं चांदी के थालों में रखकर उनके सामने पेश की जाती। जो कुछ वह स्वीकार करतीं, रख ली जातीं, शेष कोठारी को वितरित करने के लिए भेज दी जातीं। तीन बजे वह दरबार में जातीं। उस समय वह पुरुष की पोशाक पहनती थीं। पाजामा, गहरे नीले रंग का कोट, सिर पर टोपी जिस पर एक सुंदर पगड़ी बंधी होती थी। कमर में जरी के काम का दुपट्टा बंधा होता और जिसमें एक तलवार लटकती रहती। इन परिधानों से सुसज्जित वह साक्षात गौरी का अवतार दिखाई देती थीं। कभी-कभी वह स्त्रियों की पोशाक भी पहन लेती थीं। वैधव्य को प्राप्त होने के बाद उन्होंने नथ आदि का परित्याग कर दिया था। हाथों में हीरे की चूड़ियां, ग्रीवा में मुक्तामाला और कनिष्ठ उंगली में हीरे की एक मुद्रिका ही पहनती थीं। केश उनके पीछे गुथे रहते। सामान्यत: सफेद रंग की साड़ी और पोलका पहनना उन्हें पसंद था।

वह दरबार के निकट एक कक्ष में बैठतीं और दरबारी उनके दर्शन प्राय: नहीं कर पाते थे। सोने के काम की चिकें पड़ी रहती थीं और वह नरम गाव-तकियों पर बैठती थीं। लोग उन्हें बाई-साहब कहते थे। द्वार के बाहर दो द्वारपाल चुस्त पोशाकों में रहते थे। कक्ष के सामने लक्ष्मणराव दीवानजी राज्य के आवश्यक कागज-पत्र लिए खड़े होते और उनके पीछे बाई-साहब हर मसले पर अविलंब निर्णय दे देती थीं। शायद ही कभी ऐसा अवसर आया हो जब उनका निर्णय उचित न रहा हो। कभी-कभी आदेश वह स्वयं अपने-आप भी लिख देती थीं। उनके न्याय की प्रसिद्धि दूर-दूर तक थी।

रानी महालक्ष्मी की भक्त थीं। महालक्ष्मी का मंदिर झील के तट पर बना था जहां वह हर मंगलवार और शुक्रवार को पूजन के लिए जाती थीं। एक दिन जब रानी मंदिर के दक्षिण द्वार से पूजा के बाद लौट रही थीं, उन्होंने वहां पर भिखारियों की भीड़ देखी। उन्हें देख रानी बहुत दुखी हुई। उन्होंने लक्ष्मणराव पांडे से मामले की जांच करने को कहा। ज्ञात हुआ कि पर्याप्त कपड़े के अभाव में वे ठिठुरे जा रहे हैं और बाई साहब से अपने पर कुछ कृपा के अभिलाषी हैं। रानी ने यह दुखदायी कथा सुनकर आदेश दिया कि सब भिखारी चौथे दिन इकट्ठे हों और हर एक को मोटा कोट, टोपी और एक कंबल दिया जाए। अगले ही दिन नगर के सभी दर्जियों को कोट और टोपी तैयार करने का आदेश दे दिया गया।

नियत दिन सभी भिखारी और गरीब लोग महल के सामने उपस्थित हुए। सबको कपड़े दे दिए गए और रानी की जय-जयकार करते हुए सभी संतुष्ट होकर चले गए।

युद्ध में आहत सैनिकों की जब मरहम-पट्टी होती थी तो रानी स्वयं उपस्थित रहती थीं और उनके वात्सल्य से सिपाही बड़ी जल्दी भले-चंगे हो जाते थे, उन्होंने मां का हृदय जो पाया था। जब वह अपने सैनिकों को पदक आदि पुरस्कार देती थीं तो उससे

सैनिकों का उत्साह और भी बढ़ जाता था।

उत्सवों के अवसर पर जब वह पालकी में बैठकर महालक्ष्मी के मंदिर जाने को निकलतीं तो वह एक दर्शनीय दृश्य होता था। घोड़े पर पुरुष वेश में उनकी छवि का वर्णन अंग्रेजों तक ने किया है। उनके आगे स्वतंत्रता का राष्ट्रीय झंडा होता और सैनिक धुन बजाता हुआ बैंड आगे-आगे चलता। दो सौ यूरोपियन और एक सौ घुड़सवार झंडे के पीछे होते। पालकी अथवा उनके घोड़े के पीछे कारबारीन, मंत्री, जागीरदार तथा अन्य उच्च अफसर होते, जैसे भैया साहब उपसेनापति। इनके अलावा सैंकड़ों, हजारों व्यक्ति पैदल अथवा घोड़ों पर चलते। कभी-कभी सैनिक भी जुलूस में होते थे।

ऐसी रानी को फिरंगियों से जूझना पड़ा। झांसी के किले को अंग्रेजों ने घेर लिया। द्वार बंद थे पर अंग्रेज बराबर किला जीतने की ताक में थे। उन्होंने घात लगाईं और कई बार असफल होने के बाद वे किले पर पहुंचने में सफल हो गए। किले की लूट शुरू हुई। धू-धू करके किले का रूप शमशान सा हो रहा था। रानी धुएं में रंगी अब भग्न किले की दीवार पर खड़ी किले की ओर देख रही थीं। उनके सामने का वह वीभत्स दृश्य उनका हृदय मसोस रहा था, पर वह अकेली क्या करतीं। पर नहीं, अकेली लक्ष्मीबाई किसी से कम न थीं। आत्मसमर्पण करना वह जानती न थीं। रानी के विश्वस्त जन एक-एक करके स्वर्ग सिधार चुके थे। गुलाम गोसखां और कुंअर खुदाबख्श शहीद हो चुके थे। पर रानी किला छोड़ने को तैयार न थीं। सरदारों ने कहा कि अब आप शत्रु शिविर में से निकलकर पेशवा की सेना में जा मिलिए और झांसी लेने का यत्न कीजिए। रानी ने कहा

कि मैं अपने प्रजाजनों को इस संकट में छोड़कर नहीं जाऊंगी, यहीं मर जाना पसंद करूंगी। पर फिर कुछ सोचकर उन्होंने कहा, "मरने से क्या डरना पर कहीं मेरे शरीर का अपमान शत्रु न करे?" इस पर अनेक कंठों ने कहा कि जब तक हम जीवित हैं, यह नहीं हो सकता।

रात हुई, रानी का विवेक जागा। अकेले अपने लिए इतने आदमियों को मरवा देना कहां की बुद्धिमानी होगी? शीघ्र ही उन्होंने किले से चले जाने का निर्णय किया और अंतिम बार अपने प्रजाजनों को आशीर्वाद दिया। पुरुष वेष में अपने दत्तक पुत्र दामोदरराव को पीठ पर बांधे वह चलीं मानो युद्ध की देवी भवानी पृथ्वी पर उतर आई हो। बीस घुड़सवारों के साथ वह किले के उत्तरी द्वार से निकलीं तो टिहरी राज्य के देशद्रोही सैनिकों ने पूछा, "कौन?" पर इतनी देर में ये बीच-पच्चीस घोड़े शत्रु के शिविर के बीच में पहुंच चुके थे। उन्हें रोक लिया गया और युद्ध शुरू हो गया। उसी बीच रानी घोड़े को उड़ा ले चलीं। घायल मोरोपांत ताम्बे ने उनका दतिया तक साथ दिया, किंतु देशद्रोही दीवान ने उन्हें पकड़कर अंग्रेजों को दे दिया और उन्हें फांसी पर चढ़ा दिया गया।

आगे-आगे घोड़े पर रानी वायुवेग से जा रही थीं तो उनके पीछे लेफ्टिनेंट बोकर दौड़ रहा था। रात भर दौड़ हुई और रानी आगे ही रही। प्रभात होने को हुआ कि मंडरेगांव के निकट रानी जा पहुंची। वहां कुछ देर उन्होंने विश्राम किया। कुछ जलपान किया, पर यह क्या, पीछे धूल के बादल दिखने लगे। रानी कालपी की सड़क पर फिर बढ़ी। अंग्रेज निकट आ गए। वहां फिर रानी के दस पंद्रह थके-मांदे और घायल साथियों की उनसे मुठभेड़ हुई।

सुबह से दोपहर और दोपहर से शाम हो आई पर रानी की यात्रा जारी रही। तारे चमक निकले पर रानी ने घोड़ा न रोका। मध्य रात्रि तक 102 मील चलकर रानी कालपी पहुंच गईं। वहां पर श्री रावसाहब पेशवा से उन्होंने परामर्श किया और तय किया कि आजादी का युद्ध जारी रखा जाए।

ग्वालियर के जियाजी राव सिंधिया और उनके मंत्री दिनकर राव डर गए। उन्होंने कहकर भी रानी का साथ न दिया। पर रानी आजादी की दीवानी थीं। वह फिर युद्ध में जूझीं और अपनी अंतिम संगिनी मंदार का शब्द उन्होंने सुना- "बाई साहब, मैं चली। मुझे आशीर्वाद दो।" रानी का घोड़ा गिर गया और वह भारी कलेजे और भारी पगों से आगे बढ़ीं। पर कई अंग्रेज उनका पीछा कर रहे थे। तलवारें चलीं। अकेली रानी रणचंडी के रूप में उन पर बरस पड़ीं। पर अकेला चना क्या भाड़ फोड़ता, एक फिरंगी की तलवार उनके मस्तष्क पर लगी। उनके मस्तक का सीधा भाग कट गया और सीधी आंख भी निकल पड़ी। तभी एक और वार भी हो गया। पर मृतप्राय होते हुए भी रानी की तलवार ने उस अंग्रेज को मार गिराया।

अब अंतिम समय आ पहुंचा। अति स्वामिभक्त सेवक रामचंद्रराव देशमुख पास ही था। उसने रानी को उठाया और पास की झोंपड़ी में रख दिया। झोंपड़ी में गंगादास बाबा ने उन्हें अंतिम बार शीतल जल पिलाया। खून से लथपथ वह भूमि की शय्या पर पड़ी अंतिम सांसें ले रही थीं। मरने से पूर्व उन्होंने केवल इतना कहा, "मेरे शरीर को फिरंगियों के हाथ में न पड़ने देना।"

सितारा अस्त हो गया। तभी जंगल में तिनकों की सेज सजाई गई जिस पर भारत वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई का अंतिम संस्कार हुआ और धू-धू कर अग्नि जल उठी।❑

-प्रकाशन विभाग की पुस्तक 'कहानियां बलिदान की' से साभार

रानी और लाल परी

–सुरेशचंद्र रोहरा

रानी एक नन्ही-मुन्नी लड़की, मगर एक नंबर की शरारती घर में बैठे-बैठे ऐसा कुछ करती कि मां-पिताजी तो परेशान होते ही, घर के अन्य सदस्य चींटा, छिपकली, शेरू कुत्ता, पेड़ पर बैठ दौड़ती-उतरती प्यारी गिलहरी सभी हलकान- परेशान रहते।

दिन में दो-चार शरारतें करना उसकी फितरत बन गया था। इस सब कारस्तानी से रानी की मां को बार-बार अफसोस होता। वह रानी से दरख्वास्त करती ''रानी! शरारतें करना बंद कर दो रानी बेटा... यह अच्छी बात नहीं।'' मगर रानी थी कि मां की सीख एक कान से सुन दूसरे कान से निकाल देती।

आज सुबह रानी उठी तो उसने सोचा आज मैं कुछ विशेष करूंगी पर क्या? उसके मन में उमड़ने-घुमड़ने लगा... क्या? उसे याद आया कि एक दिन टेलीविजन पर अजब-गजब कार्यक्रम में बताया गया था कि एक शख्स ने दांतों से मोटरकार खींची थी और उसका नाम गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज हो गया है। यह सोचते ही उसके मुखड़े पर मुस्कुराहट खेलने लगी। रानी ने निर्णय लिया आज वह भी कुछ ऐसा करेगी जिससे उसका नाम भी स्वर्ण अक्षरों में गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज हो जाएगा।

रानी ने बिस्तर पर लेटे-लेटे ही सोच लिया कि वह शरारतों के क्षेत्र में रिकॉर्ड बनाएगी, आज जितनी हो सके शरारतें करेगी और दिखा देगी कि दुनिया वालो! रानी भी रिकॉर्ड बनाने में कहीं से कमतर नहीं है।

पहली शरारत उसने प्रारंभ की और सोते-सोते म्याऊं-म्याऊं मुंह से निकालने लगी। पास में सोती दादीमां की नींद टूट गई। दादीमां इधर-उधर देखने लगी घर में बिल्ली क्या कर रही है। मगर दादी को बिल्ली दिखाई नहीं दी। इधर रानी का चुपके-चुपके म्याऊं-म्याऊं अभियान जारी रहा। दादीमां परेशान उसने रानी की मां को आवाज दी, बहू! देखो

बिल्ली ने मुझे परेशान कर रखा है। मां आई आते-आते दूर से सुना म्याऊं-म्याऊं पास पहुंची तो कुछ नहीं। रानी को देखा तो वह गहरी निंद्रा में सोती दिखी। मां भी परेशान। सारा कमरा इधर-उधर देखा मगर बिल्ली कहीं हो तो दिखे... दोनों को परेशान देख रानी खिलखिला कर हंसने लगी और म्याऊं-म्याऊं कर जता दिया कि असल बिल्ली तो वही है। दादीमां और मां दोनों ने रानी को भला-बुरा कहा और अपने काम में व्यस्त हो गई। मां ने रानी के लिए दूध और बिस्कुट ला कर रखे।

मां चली गई तो रानी को शरारत सूझी वह जोर-जोर से रोने लगी। मां आई तो रानी ने कहा- ''दूध में मक्खी है। मैं ऐसा दूध नहीं पियूंगी।''

मां बोली ''रानी... दूध फेंक दो। दूसरा दूध का गिलास लाती हूं।'' जैसे ही मां किचन में दूध बनाने गई रानी ने दूध पी लिया तब तक मां दूसरा दूध का गिलास ले आई। रानी ने फिर रंग दिखाया बोली ''मैं यह दूध नहीं पियूंगी।'' मां ने झुंझला कर कहा- ''भला क्यों! दूसरी दूध ले आई हूं बेटा पी ले।'' रानी हंस कर बोली ''मैं तो पहला वाला दूध ही पी गई।''

मां समझ गई रानी आज शरारत करने के मूड में है। मां बोली- ''रानी! बहुत हो गया अब चलो पढ़ाई करो... घर का कुछ काम करो।''

मगर रानी के दिमाग में आज शरारतें भरी हुई थीं। मां बोली ''चलो! आज मेरे काम में हाथ बंटाओ...'' मगर रानी सुनी-अनसुनी कर एक के बाद एक शरारतें करती चली गई। परेशान मां ने कहा ''मैं तुमसे तंग आ गई हूं तुम्हारे दिमाग का इलाज कैसे कराऊं...'' दुखी मां को घर पर छोड़ रानी आंगन में आकर खेलने लगी और वहीं शरारतें करने लगी। देखा चीटियों का दल शक्कर के, दाने लेकर अपने घर को जा रहा है। रानी ने तत्काल उनके सामने एक बड़ी-सी ईंट लाकर रख दी।

शक्कर ले जा रही चीटियों को बड़ी परेशानी हुई। उन्हें अब ईंट पर चढ़कर आगे जाना पड़ रहा था। यह देख रानी तालियां बजा कर खुश हुई और जैसे ही आगे बढ़ी कि दूसरी शरारत करूं। उसे एक मधुर स्वर सुनाई पड़ा- ''रानी तू बड़ी शरारती हैं... तेरी शिकायत लाल परी से करूंगी।''

रानी ने देखा चीटियों की रानी एक बड़ी सी लाल चींटी उसी की ओर मुखातिब थी। रानी बोली- ''लाल परी! लाल परी कहां से आती है और मेरा क्या बिगाड़ सकती है।''

चींटी बोली- ''रानी! लाल परी हम जैसी असहाय दुखी पीड़ितों की रक्षक है और तुम्हारे

जैसी बिगड़ैल लड़कियों को ठीक करने वाली चमत्कारी देवी है। तुमने हमको खूब सताया है।''

मगर रानी मुस्कुराती हुई चीटियों की रानी की बात अनसुनी कर के अपने लक्ष्य की ओर बढ़ती चली गई। आज उसने चींटा, गिलहरी, छिपकली, मैना, तोता सब को चुन-चुन कर शरारतें कर हलकान कर दिया और अपनी शरारतों की फेहरिस्त तैयार करती रही।

इधर जब रात हुई तो दादी ने पास लेटी रानी को प्यार से पुचकार कर समझाया ''रानी! तुम्हारी शरारतें बढ़ती चली जा रही हैं, यह अच्छी बात नहीं है।''

रानी हंस कर बोली- ''दादी मुझे तो शरारतों में बड़ा मजा आता है। पता है आज मैंने पूरी 109 शरारतें की हैं।''

अच्छा दादी का मुंह फटा का फटा रह गया, इधर रानी अपनी शान बघारते हुए शरारतों की फेहरिस्त गिनाने लगी। दादी को यह सुन बहुत क्षोभ हुआ। गहरी सांस लेकर दादी मां रह गई।

रानी अपनी फेहरिस्त तैयार करने में मग्न थी। शरारतों की सूची लिखकर तैयार करनी है, उसे गिनीज़ बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड के दफ्तर भेजना है ताकि उसका नाम दर्ज हो सके... ऐसा करते-करते उसे निंद्रा देवी ने आ घेरा। वह दादी मां के पास ही सो गई।

निंद्रा में रानी ने देखा चींटी, गिलहरी, बिल्ली और छिपकली, उसकी शिकायत लाल परी से कर रही हैं। रो-रोकर बता रही हैं कि रानी ने उन्हें खूब प्रताड़ना दी है, परेशान कर रखा है। लाल परी हमारी रक्षा करो।

लाल परी का चेहरा देवीत्यमान है। हाथ में जादू की छड़ी है, बातें करती है तो मुंह से फूल झड़ते हैं। लालपरी सभी का दुखड़ा सुन उन्हें आश्वस्त करती हैं और रानी के पास आ कर मुस्कुरा उसका हाथ पकड़ उसे आकाश मार्ग की ओर ले जा रही हैं।

बादलों के बीच रानी और लालपरी चले जा रहे हैं। लालपरी बोली- ''रानी, यदि शरारत के नाम पर मैं तुम्हें यहां छोड़ दूं तो? यह सुनते ही आकाश मार्ग और धरती का अंतर देख रानी सिहर गई। परी ने मुस्कुराते हुए कहा, ''अरे! यह तो मात्र शरारत होगी। तुम डर क्यों गई। तुम क्या कभी सोचती हो कि तुम्हारी शरारतें दूसरों के लिए कितनी नुकसानदायक होती है?'' ''रानी तुम इतनी अच्छी सुंदर बालिका होकर बेचारे निहत्थे जानवरों, कीट पतंगों को क्यों परेशान करती हो।''

रानी बोली- ''लाल परी मुझे अच्छा लगता है। और पता है इससे मेरा नाम गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज हो जाएगा।''

लाल परी बोली- ''रानी! तुम अपना नाम शरारतें करके क्यों अच्छे काम करके भी तो दर्ज करा सकती हो। फिर तुम्हें हमारा साथ मिलेगा और यह सब तुम्हारे दोस्त भी बन जाएंगे।''

लाल परी की स्नेहमयी वाणी सुन रानी की समझ बदल गई। वह सोचने लगी बात तो बिल्कुल सही बोल रही है लाल परी, मैं तो मूक प्राणियों के साथ शरारत कर बुरा काम कर रही हूं।

लाल परी बोली- ''देखो! तुम चाहो तो अच्छी बन सकती हो अगर शरारतें छोड़ दो तो मैं तुम्हें अपनी दोस्ती का ऑफर देती हूं। आज से हम दोस्त हो जाएंगे नहीं तो...।''

यह सुन रानी चिल्लाने लगी ... ''नहीं... नहीं नहीं। मैं शरारतें नहीं करूंगी। मैं अच्छे काम करके अपना नाम गिनीज बुक में दर्ज कराऊंगी।'' यह कहते-कहते हुए उसकी निंद्रा टूट गई। वह उठ बैठी। सुबह हो चुकी है। उसने आज निर्णय लिया आज से शरारतें बंद... रानी और लालपरी की दोस्ती का एक नवयुग प्रारंभ हुआ। ❑

सी31, प्रेस कांप्लेक्स ट्रांसपोर्ट नगर, कोरबा-495677 छत्तीसगढ़

लोकतंत्र पर गांधी जी के विचार

–यू.एस.मोहन राव

मनुष्य की बनाई हुई कोई भी संस्था ऐसी नहीं है, जिसमें खतरे या दोष न हों। संस्था जितनी ही बड़ी होती है उसके दुरुपयोग की उतनी ही अधिक संभावनाएं होती हैं। लोकतंत्र महान संस्था है, अतः उसका दुरुपयोग भी बहुत हो सकता है। इसका इलाज लोकतंत्र से बचना नहीं बल्कि उसके दुरुपयोग की संभावना को कम से कम करना है।

मुझे राजनीति में इस कारणवश आना पड़ा कि मैंने यह अनुभव किया कि बिना राजनीति में आए मैं सामाजिक कार्य भी नहीं कर सकता। मेरा ख्याल है कि राजनीतिक काम को सामाजिक तथा नैतिक प्रगति के रूप में समझना चाहिए। लोकतंत्र में जीवन का कोई भी अंग राजनीति से अछूता नहीं रहता।

सच्चा लोकतंत्र अथवा जनता का स्वराज मिथ्या तथा हिंसक तरीकों से कभी स्थापित नहीं किया जा सकता। इसका सीधा-सादा कारण यह है कि इन तरीकों का स्वाभाविक परिणाम यह होगा कि विरोधियों को दबाकर अथवा उनका नाश करके सारे विरोध को समाप्त कर दिया जाएगा। इससे व्यक्ति स्वातंत्र्य को बल नहीं मिलता। व्यक्ति स्वातंत्र्य विशुद्ध अहिंसा के राज्य में ही पनप सकता है।

लोकतंत्र के संबंध में मेरी धारणा यह है कि उसमें कमजोर से कमजोर तथा बलवान से बलवान व्यक्ति को समान अवसर मिलना चाहिए। अहिंसा के सिवा और किसी तरीके से ऐसा नहीं हो सकता। आज विश्व में कोई भी देश ऐसा नहीं है जो गरीबों की हित-रक्षा करना अपना कर्त्तव्य समझता हो, उनके लिए जो कुछ भी किया जाता है, वह मेहरबानी के तौर पर।

सत्ता में जब तक सब लोगों का हिस्सा नहीं होता तब तक लोकतंत्र की स्थापना एक असंभव बात है। लेकिन लोकतंत्र को पतित होकर भीड़तंत्र में परिणित नहीं होने देना चाहिए। एक अत्यंत तथा एक श्रमिक का भी, जो आपको अपनी रोजी कमाने में मदद देता है, स्वराज में हिस्सा होगा। परंतु आपको उनके संपर्क में आना होगा, उनके पास जाना होगा, उनके झोंपड़ों को देखना होगा जिनमें वे जानवरों की तरह रहते हैं। मानवता के इस अंग की देखभाल करना आपका कर्त्तव्य है।

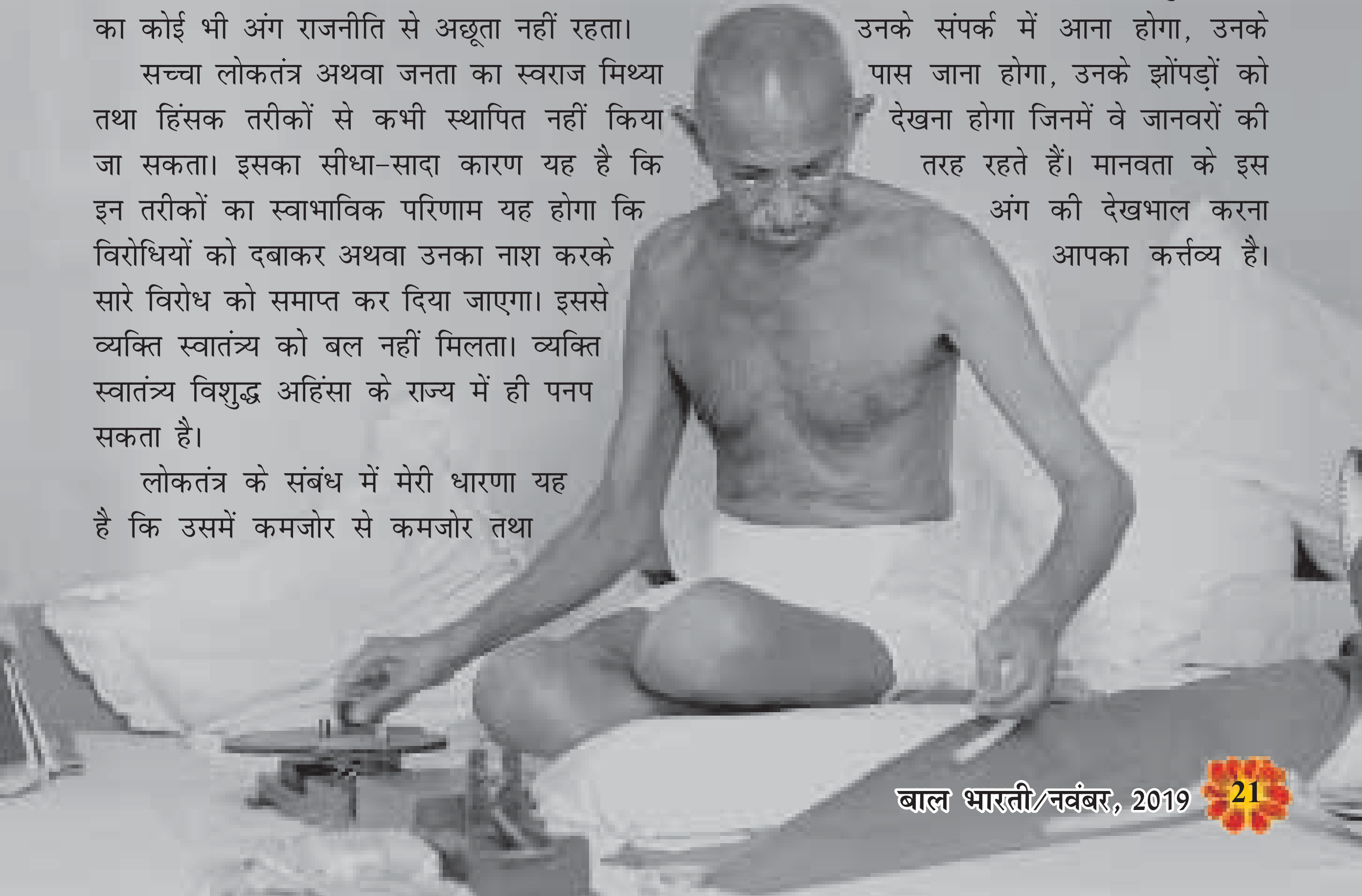

उनके जीवन को बनाया या बिगाड़ना आपके हाथों में है।

यदि हम विपक्ष की बात सुनने को तैयार नहीं हैं तो लोकतंत्र का विकास संभव नहीं है। जब हम अपने विरोधियों की बात सुनने से इंकार कर देते हैं अथवा उसे सुनने के बाद उनका मजाक उड़ाते हैं, तब अपने विवेक के द्वार बंद कर देते हैं। जब असहिष्णुता हमारी आदत बन जाती है तब सत्य को गंवा देने का खतरा उत्पन्न हो जाता है। प्रकृति ने हमें जितनी समझ दी है और जहां तक हम अपना मार्ग देख सकते हैं, वहां तक हमें निडर होकर काम करना चाहिए। हमें अपना दिमाग खुला रहना चाहिए और इस बात को मानने के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए कि हम जिस बात का सत्य समझ बैठे थे वह आखिरी सत्य नहीं। इस तरह दुराग्रह छोड़ने से हमारे अंदर व्याप्त सत्य पुष्ट होता है और यदि उसमें कोई खोट भी हुआ तो वह भी नष्ट हो जाता है।

मैंने बार-बार यह बात कही है कि किसी भी विचारधारा के लोग यह दावा नहीं कर सकते कि उनके विचार बिल्कुल सही हैं। हम सब लोग गलती कर सकते हैं और हमें अक्सर अपने निर्णय बदलने पड़ जाते हैं। भारत जैसे इस विशाल देश में सभी सही विचारधाराओं के लिए स्थान होना चाहिए। अतः हमारा अपने विरोधियों के दृष्टिकोण को समझने की कोशिश करें और यदि हम उसे स्वीकार नहीं कर सकते तो उसका उतना ही आदर करें जितना हम उनसे अपने दृष्टिकोण के आदर की उम्मीद रखते हैं।

सच्ची लोकशाही केंद्र में बैठे हुए बीस आदमी नहीं चला सकते। वह तो नीचे से हर एक गांव के लोगों द्वारा चलाई जानी चाहिए।

कोई भी सरकार पूरी तरह से अहिंसक बनने में सफल नहीं हो सकती क्योंकि वह सभी लोगों का प्रतिनिधित्व करती है। मैं इस तरह के स्वर्ण युग की आज कल्पना नहीं करता। लेकिन मैं एक अहिंसा प्रधान समाज की संभावना में अवश्य विश्वास करता हूं और उसके लिए प्रयत्नशील भी हूं।

अधिकतर लोग सरकार के पेचीदा तंत्र को नहीं समझते। वे यह नहीं समझते कि हर एक नागरिक, अपने समय की सरकार को कायम रखने में अनेक तरीकों से, जिनकी उसे जानकारी भी नहीं होती, मूक रूप से लेकिन निश्चय ही योगदान देता है। अतः प्रत्येक नागरिक अपनी सरकार के प्रत्येक काम के लिए उत्तरदायी होता है और जब तक सरकार के काम सराहनीय हों तब तक उसका समर्थन करना बिल्कुल उचित है। पर जब उसके कामों से उसे (नागरिक को) तथा उसके राष्ट्र को नुकसान पहुंचने लगे तब उसका यह कर्त्तव्य है कि वह उसका समर्थन करना बंद कर दे।

यदि व्यक्ति का कोई महत्व ही नहीं रह जाता तो समाज में बचा ही क्या रहता है? व्यक्ति-स्वातंत्र्य ही एक ऐसी चीज़ है जो मनुष्य को समाज की सेवा के लिए अपने को अर्पित करने प्रेरणा दे सकती है। यदि उससे यह स्वातंत्र्य छीन लिया जाता है, तो वह यंत्र मात्र बनकर रह जाता है और समाज नष्ट हो जाता है। व्यक्ति-स्वातंत्र्य को समाप्त करके किसी भी समाज का निर्माण संभव नहीं है। जनता के स्वराज का अर्थ है व्यक्तियों का स्वराज (स्वशासन) और इस तरह का स्वराज तभी प्राप्त होता है जब सभी व्यक्ति नागरिक होने के नाते अपने कर्त्तव्य का पालन करें। इसमें कोई भी व्यक्ति अपने अधिकारों को नहीं सोचता। अधिकार तो जब जरूरत होती है, प्राप्त हो जाते हैं, जिसे व्यक्ति अपने कर्त्तव्य का और अच्छी तरह पालन कर सके।

जो व्यक्ति अपने कर्त्तव्य का अच्छी तरह पालन करता है उसे अधिकार आपसे आप प्राप्त हो जाते हैं। वस्तुतः अपना कर्त्तव्य पालने का अधिकार ही एकमात्र ऐसा अधिकार है जिसके लिए जीवित रहा

जा सकता है और जिसके लिए प्राण भी दिए जा सकते हैं। इसके अंतर्गत सभी न्यायोचित अधिकार आ जाते हैं। इसके अलावा और सब अधिकार किसी न किसी रूप में अपहरण मात्र हैं और उनमें हिंसा के बीच विद्यमान होते हैं।

अधिकारों का सच्चा स्त्रोत कर्त्तव्य है। यदि हम सब लोग अपना-अपना कर्त्तव्य करें तो अधिकार आसानी से मिल जाते हैं। यदि हम अपने कर्त्तव्य को किए बिना अधिकारों के पीछे दौड़ेंगे तो मृग-मरीचिका की तरह वे हमसे दूर होते जाएंगे। यह शिक्षा श्रीकृष्ण के इन अमर शब्दों में दी गई है, "कर्मण्येधिकारस्ते, मा फलेषु कदाचन।" कर्त्तव्य कर्म, अधिकार फल है।

लोकतंत्र में दब्बूपन के लिए कोई स्थान नहीं है। जब लोग आमतौर से किसी चीज़ में विश्वास करते हैं और उसकी मांग करते हैं, तब उनके प्रतिनिधियों के सामने इसके सिवाय और कोई चारा नहीं रह जाता कि वे उनकी मांग को पूरा करें। देखा गया है कि जनसमूह के संकल्प तथा पौरुष अपनाने पर लड़ाई जीतने में बहुत मदद मिली है।

यदि हम यह सोचने लगे कि अब तो स्वराज मिल गया और अब हम निश्चित होकर बैठ सकते हैं, तो हम देश का सबसे बड़ा नुकसान करेंगे। अब तक लोगों की सारी शक्ति ब्रिटिश सरकार से लड़ने में लगी थी। अब उसी शक्ति को राष्ट्र को सुखी बलवान बनाने में लगाना चाहिए, अन्यथा वह उलटकर हमारे ही ऊपर पड़ेगी और हमारे अंदर फूट तथा विघटन पैदा करेगी।

यदि आम जनता स्वतंत्रता का भोग करना चाहती है तो उसे सबसे पहले स्वेच्छा से अनुशासन पालन करने को, आत्मसंयम का मंत्र सीखना होगा। अन्यथा स्वतंत्रता-स्वतंत्रता नहीं बल्कि परतंत्रता होगी। हर देश में लोगों को वैसी ही सरकार मिलती है जिसके वे पात्र होते हैं। यदि हुल्लड़बाजी करेंगे तो सरकार तथा उसके अधिकारी भी कानून और व्यवस्था के नाम पर वैसा ही करेंगे। इसका नतीजा आजादी या स्वतंत्रता नहीं बल्कि अराजक शक्तियों की कशमकश होगा जिसमें दोनों एक-दूसरे को दबाने की कोशिश करेंगे। सामूहिक स्वतंत्रता की पहली आवश्कता है,

आत्म-अनुशासन। यदि लोगों का व्यवहार शिष्ट होगा तो सरकारी अधिकारी उनके सच्चे सेवक बन जाएंगे, अन्यथा वे उनकी गर्दन पर चढ़ बैठेंगे जो बिल्कुल अनुचित भी न होगा।

यदि नेता तथा कार्यकर्त्ता समय की पाबंदी सख्ती से करें तो इससे राष्ट्र का विशेष लाभ होगा। किसी भी व्यक्ति से जितना काम वह सचमुच कर सकता है, उससे ज्यादा की अपेक्षा नहीं की जाती। यदि दिन के अंत में कुछ काम बचा रहता है अथवा यदि कोई कार्यकर्ता अपना एक समय का भोजन छोड़े बिना या अपने सोने अथवा मनोरंजन के समय में कटौती किए बिना अपना काम पूरा नहीं कर पाता तो इसका मतलब है कि कहीं न कहीं अव्यवस्था है। मुझे इसमें संदेह नहीं कि यदि हम अपना काम समय से करने की आदत डाल लें और (निर्धारित) कार्यक्रम के अनुसार काम करें तो राष्ट्रीय क्षमता अवश्य बढ़ेगी तथा हम अपने लक्ष्य की ओर तेजी से बढ़ेंगे कार्यकर्ता लोग अधिक स्वस्थ तथा दीर्घजीवी होंगे।

हमारा नैतिक स्वर इतनी तेज़ी से गिर रहा है कि अब मैं अनुभव करता हूं कि हमारी सत्याग्रह की लड़ाइयों में सच्ची भावना की कमी क्यों थी और वह निर्बलों का सत्याग्रह मात्र बन कर क्यों रह गई थीं।

इसलिए मैंने कहा कि जो व्यक्ति सब परिस्थितियों में नेक बना रहना चाहता है तथा नेकी करते रहना चाहता है उसे कभी सत्ता नहीं ग्रहण करनी चाहिए।

सार्वजनिक धन भारत की गरीब जनता का धन है जिससे ज्यादा गरीब इस पृथ्वी पर और कोई नहीं है। इसलिए, हमें और ज्यादा सजग, सतर्क तथा सावधान रहना चाहिए और हमें जनता से मिलने वाली हर पाई का हिसाब देने के लिए (हमेशा) तैयार रहना चाहिए।

किसी भी संगठन के लिए अपना हिसाब-किताब सही रखना अनिवार्य आवश्यकता है। हिसाब-किताब ठीक से रखे बिना सत्य का विशुद्ध रूप में पालन असंभव है।

यदि हम एक-एक पाई का, जो हमें मिलती है, हिसाब नहीं रखते और उसका समुचित ढंग से उपयोग नहीं करते तो हमें सार्वजनिक जीवन से निकाल दिया जाना चाहिए।

समस्त सार्वजनिक संस्थानों का बैंक जनता ही होनी चाहिए और उसकी मर्जी के खिलाफ, उन्हें एक दिन भी कायम नहीं रहना चाहिए। जो संस्था संचित पूंजी के ब्याज पर चलती है, वह जनमत के आगे नहीं झुकती और निरंकुश हो जाता है तथा अपने हर काम को सही समझने लगती है।

अनेक सार्वजनिक संस्थाओं का मुझे जो अनुभव हुआ है उससे मेरा यह दृढ़ विश्वास हो गया है कि सार्वजनिक संस्थानों को स्थायी कोषों द्वारा चलाना अच्छा नहीं होता। स्थायी कोष में संस्था के नैतिक पतन के बीज रहता है। सार्वजनिक संस्था का मतलब है ऐसी संस्था जो जनता की स्वीकृति तथा जनता के पैसे द्वारा चलाई जाए। संस्था को जब जनता का समर्थन मिलना बंद हो जाता है, तब उसे बने रहने का अधिकार नहीं रह जाता। जिन संस्थानों का संचालन स्थायी कोषों द्वारा होता है वे अक्सर जनमत की उपेक्षा करती हैं और जनमत के खिलाफ काम करती हैं। इसका अनुभव हमें अपने देश में हर कदम पर होता है। कुछ तथाकथित धार्मिक न्यासों ने हिसाब-किताब रखना ही बंद कर दिया है। न्यासीन मालिक बन बैठे हैं और वे किसी के प्रति जवाबदार नहीं हैं। मुझे इसमें ज़रा भी संदेह नहीं कि सार्वजनिक संस्थानों का अस्तित्व प्रकृति की भांति उनके प्रतिदिन के काम पर निर्भर होना चाहिए। जिस संस्था को सार्वजनिक समर्थन प्राप्त न हो उसे कायम रहने का कोई अधिकार नहीं है। ❑

–प्रकाशन विभाग की पुस्तक 'महात्मा गांधी का संदेश' से साभार

जलपरी की दुनिया

–बिन्दुविकास

शाम का खाना खाने के बाद तुहिना हर रोज की भांति दादी से पंचतंत्र की कहानियां सुन रही थी। सोने के पहले हर रोज दादी से कहानी सुनना उसकी दिनचर्या थी जिसके बगैर उसे नींद ही नहीं आती थी। पर आज पता नहीं कब उसकी पलकें मुंद गईं उसे पता ही नहीं चला शाम को गली में वह खेलती रही थी। फिर गांव की नदी में अपने साथियों का साथ देर तक तैरती रही थी। शायद इसलिए थक गयी थी। तुरंत गहरी नींद आ गयी थी। नींद में ही समुद्र किनारे उसकी भेंट रेत पर लेटी एक जलपरी से हो गयी। दादी ने उसे बताया था कि जलपरी बहुत खूबसूरत होती है। वह सफेद वस्त्र धारण किए होती है और उसके दोनों कंधों पर पंख होते हैं। इसलिए वह उड़ भी सकती है। पर जो जलपरी उसके सामने लेटी थी उसके कंधों पर कोई पंख नहीं था। तुहिना ने सोचा कि दादी गप्प हांक रही थी। भला जलपरी के पंख होते तो इतने आराम से रेत पर लेट पाती।

अभी तुहिना मन ही मन सोच ही रही थी कि जलपरी ने उंगली के इशारे से निकट बुलाया और पूछा, "तुम तुहिना हो न?"

"जी, पर आप मेरा नाम किस तरह जानती हैं दीदी," तुहिना ने हकलाते हुए पूछा

"मैं सबको पहचानती हूं। समुद्र किनारे आनेवाले सब मेरे परिचित हैं," समुद्र की ओर देखते हुए बोल, "समुद्र के अंदर उतर कर कभी देखा है कितनी सुंदर दुनिया है वहां?"

"न बाबा न मुझे तैरना नहीं आता दीदी। पैर रखते डूब जाऊंगी। मम्मी-पापा परेशान हो जाएंगे। इसलिए मुझे माफ करो। मैं घर चली," तुहिना घबरा गई।

"मैं हूं न पगली। फिर डरना किसलिए। मैं तुझे पीठ पर बिठा अंदर ले चलूंगी और फिर सकुशल यहीं छोड़ जाऊंगी।"

एक ओर समुद्र के अंदर की दुनिया का आकर्षण उसे खींच रहा था, पर दूसरी ओर छाती में धुकपुकी समाई थी। तब तक जलपरी उसका एक हाथ पकड़े समुद्र की लहरों में उतर चुकी थी। जलपरी ने दोनों हाथों से उठा उसे अपनी पीठ पर लाद लिया और दोनों हाथ से जल को दाएं-बाएं ठेलते हुए बीच समुद्र में पहुंच गई। वहां जलपरी ने उसे हिदायत दी, "मुझे कस कर पकड़ लो। मैं तुम्हें पाताल की दुनिया की सैर पर ले जा रही हूं।"

तुहिना ने दोनों हाथों से जलपरी को पकड़ लिया। वे नीचे और नीचे उतरती जा रही थीं। समुद्र में खड़ी वनस्पतियां उसकी देह को छूते हुए पीछे छूटती जा रही थीं। उसे बहुत रोमांच हो रहा था। पर डर के मारे जलपरी से कुछ पूछने की हिम्मत नहीं हो रही थी। जलपरी कहीं नाराज हो जातीं तो बीच समुद्र में न छोड़ दें। चारों तरफ छोटी-छोटी रंगीन मछलियां तैर रही थीं। उसका मन हुआ कि दो-चार रंगीन मछलियों को अपनी मुट्ठियों में भर ले। मम्मी एक्वेरियम में नई मछलियां देख खुश होंगी। पर गिरने के भय से उसकी हिम्मत नहीं हुई। मछलियां उसके इर्द-गिर्द अटखेलियां कर रही थीं। ठंडा-ठंडा पानी तुहिना को रोमांचित कर रहा था। पानी की रंगीन दुनिया उसे पल-पल लुभा रही थी।

शैवाल को दोनों हाथ से हटाते हुए जलपरी नीचे चली जा रही थीं। अंत में एक विशाल गुफा के द्वार पर पहुंची। उस पर थपकी देते द्वार के दोनों पट खुल गए। जलपरी के साथ चलते हुए तुहिना अंदर गई, तो देखा उनका महल एक जादू महल की तरह था। सबकुछ मात्र संकेत पर सेविकाएं लेकर आने लगीं। आराम से एक तख़्त पर आसीन हो जलपरी दीदी ने उसे भरपेट मिठाइयां खिलाईं।

जब वह थकी सी दिखने लगी, तो जलपरी ने पूछा, "घर की याद आ रही है?"

"हां दीदी, मम्मी ढूंढ रही होंगी। उन्हें बताया नहीं था।"

"और कुछ चाहिए?"

"दीदी, रास्ते में बहुत से रंगीन मछलियां तैर रही थीं। दो-चार मुझे देंगी तो एक्वेरियम में डाल दूंगी... मम्मी बहुत खुश होंगी"

"पर यहां से ले जाते हुए मर जाएंगी।"

"नहीं मरेंगी दीदी, यहां से उन्हें किसी पानी के बर्तन में ले जाऊंगी वहां मम्मी रोज पानी बदल देती हैं।" "ठीक है कि पानी भरे बर्तन में तुम कुछ मछलियां ले भी जाओ तो भी ये मछलियां तुम्हारे बंद पानी की अभ्यस्त नहीं हैं। इन्हें रोज ताजा पानी चाहिए।"

"रोज ताजा पानी इन्हें कौन देता है दीदी?"

अलग-अलग नदियां इन्हें ताजा पानी मुहैय्या करवाती हैं तुहिना!... पर दिन बदल रहे हैं। नदियां भी गंदा पानी लाने लगी हैं। हालांकि एक समय आएगा जब ये भी पानी के बिना तड़पेंगी इंसान की तरह क्योंकि सारे जंगल कट चुके हैं। पर्यावरण की स्थिति संतोषजनक नहीं है। हर साल बारिश कम हो रही है या इतनी हो रही है कि बाढ़ की नौबत आ जाती है ये अव्यवस्था तकलीफ तो सभी को दे ही रही है। नदियां भी कम पानी लाती हैं।"

तुम ही सोचो अगर इंसान को पानी में जीने को कहा जाए तो क्या वह जी सकता है... नहीं इसी तरह हम पानी बगैर नहीं जी सकते। तुम्हें जीने को ताजी हवा चाहिए तो हमें भी जीने के लिए साफ और ताजा पानी चाहिए।

"जानती हो तुहिना यह समुद्र की दुनिया भी एक विशाल एक्वेरियम की तरह है जिसमें भिन्न-भिन्न जीव-जंतु, वनस्पतियां बिना किस रोक-टोक के पूरी आज़ादी, पूरी बराबरी के साथ, बिना किसी ऊंच-नीच भेद-भाव के उपस्थित है। तुम्हारे एक्वेरियम की तुलना में फर्क यह है कि तुम्हारी मछलियां शीशे की चार दीवारों में कैद हैं, पर इस एक्वेरियम में सब आज़ाद हैं।"

अभी जलपरी दीदी कुछ और कहती कि मां ने उसे कंधे पर हाथ रख झिंझोड़ कर जगा दिया," अरी तुहिना क्या बड़-बड़ कर रही हो? सपना देख रही हो क्या?"

तहिना उठ कर बैठ गई। हथेली से आंखें मल उसने देखा वह अपने बिस्तर पर थी। ❑

–मूल चन्द पथ, न्यू चित्रगुप्त नगर,
पो: लोहिया नगर, पटना-800020

जनता को साथ लेकर चलें

—सरदार पटेल

आज हमारे हिंदुस्तान में कोई खतरा बाकी नहीं रहा, कोई झगड़ा-फसाद बाकी नहीं रहा है और एक प्रकार से सारे हिंदुस्तान में शांति का वातावरण स्थापित हो गया है। यह बहुत अच्छी बात है। क्योंकि जब तक मुल्क में शांति नहीं होती, तब तक मुल्क की प्रगति नहीं हो सकती और हम आगे भी नहीं बढ़ सकते। हमें आज़ादी तो मिली, पर उसके साथ देश का टुकड़ा होने से एक बदकिस्मती भी साथ मिली। इसी से आज़ादी से जो खुशहाली होनी चाहिए, वह खुशहाली हम लोगों को नहीं मिली। हमारी ही कुछ त्रुटियां होंगी कि जैसा हमने कभी अनुमान भी नहीं किया था, उस प्रकार का वायुमंडल पैदा हो गया, जिसमें बहुत-सा खून-खराबा हुआ और दुनिया में कमोबेश हमारी बदनामी भी हुई।

एक भारत श्रेष्ठ भारत

हर कौम या हर राष्ट्र खाली अपनी तलवार से वीर नहीं बनता। तलवार तो अपनी रक्षा के लिए जरूरी बात है, लेकिन राष्ट्र की प्रगति का माप उसकी नैतिक प्रगति से ही किया जा सकता है। अकेले गांधीजी की तपश्चर्या, नैतिक शक्ति और आत्मशक्ति से हमारे गुलाम देश की भी इज्जत बढ़ गई। लेकिन पिछले साल हम झगड़े में पड़ गए और उससे खून-खराबा हुआ। गुलामी से छूटने में जो बुराइयां और मुसीबतें आईं, उन्हें हम छोड़ भी नहीं सकते थे।

इस मुल्क में जितने मजहब हैं, जितनी भाषाएं हैं, उतने मजहब और उतनी भाषाएं किसी और मुल्क में नहीं हैं। लेकिन तो भी हमारे सारे मुल्क की संस्कृति एक ही है। यह हिंदी संस्कृति है। अब हमारे देश में इतने लोग रहते हैं, वे अपने झगड़े में पड़ जाएं तो इस प्रकार की हालत नहीं होनी चाहिए कि हमें फौज से काम लेना पड़े। यह काम पुलिस का है। भीतर मुल्क में शांति रखने के लिए हमें कम-से-कम पुलिस रखनी पड़े, ऐसी हालत होनी चाहिए।

मजहब के बारे में झगड़ा नहीं होना चाहिए। हमारी जो ईश्वर की मान्यता है, वह हमारी खुद की है। जो हमको पसंद हो, हम मानेंगे। तो मजहब व्यक्ति की अपनी चीज है। मजहब के लिए सब को पूरी आज़ादी होनी चाहिए। उसमें दूसरे के साथ झगड़ा नहीं करना चाहिए। इसी प्रकार हमारा जो रोजगार है, जो धंधा है, उसमें भी हमें कोई झगड़ा नहीं करना है। तो हम जो आपस में मिल-जुलकर रहते हैं, वह किसी तोप-बंदूक के डर से नहीं रहते हैं, लेकिन मुहब्बत के बल पर रहते हैं। इस प्रकार सारा हिंदुस्तान बना हुआ था।

—16 दिसंबर, 1947, नई दिल्ली में वक्तव्य

—प्रकाशन विभाग की पुस्तक 'भारत की एकता की निर्माण: सरदार पटेल के भाषण 1947-1950' से साभार

हरिवंश राय बच्चन का जन्म 27 नवंबर, 1907 को इलाहाबाद के करीब प्रतापगढ़ जिले में हुआ था। बच्चन हिंदी कविता छायावाद काल के प्रमुख कवियों में से एक हैं। उनकी सबसे प्रसिद्ध कृति 'मधुशाला' है। इनका निधन 18 जनवरी, 2003 में हुआ।

बाल दिवस पर विशेष

काला कौआ

–हरिवंशराय बच्चन

उजला-उजला हंस एक दिन
उड़ते-उड़ते आया,
हंस देखकर काला कौआ
मन ही मन शरमाया।

लगा सोचने उजला-उजला
मैं कैसे हो पाऊं-
उजला हो सकता हूं
साबुन से मैं अगर नहाऊं।

यही सोचता मेरे घर पर
आया काला कागा,
और गुसलखाने से मेरा
साबुन लेकर भागा।

फिर जाकर गड़ही पर उसने
साबुन खूब लगाया,
खूब नहाया, मगर न अपना
कालापन धो पाया।

मिटा न उसका कालापन तो
मन ही मन पछताया,
पास हंस के कभी न फिर वह
काला कौआ आया।

सबसे पहले

—हरिवंशराय बच्चन

आज उठा मैं सबसे पहले!
सबसे पहले आज सुनूंगा,
हवा सवेरे की चलने पर,
हिल, पत्तों का करना 'हर-हर'
देखूंगा, पूरब में फैले बादल पीले,
लाल, सुनहले!

आज उठा मैं सबसे पहले!
सबसे पहले आज सुनूंगा,
चिड़िया का डैने फड़का कर
चहक-चहककर उड़ना 'फर्र-फर्र'
देखूंगा, पूरब में फैले बादल पीले,
लाल सुनहले!

आज उठा मैं सबसे पहले!
सबसे पहले आज चुनूंगा,
पौधे-पौधे की डाली पर,
फूल खिले जो सुंदर-सुंदर
देखूंगा, पूरब में फैले बादल पीले,
लाल, सुनहले!

आज उठा मैं सबसे पहले!
सबसे कहता आज फिरूंगा,
कैसे पहला पत्ता डोला,
कैसे पहला पंछी बोला,
कैसे कलियों ने मुंह खोला
कैसे पूरब ने फैलाए बादल पीले,
लाल, सुनहले!

कथा संविधान की

चित्रकथा : परमात्मा प्रसाद श्रीवास्तव

वाह बेटा पहले अधिकार ही चाहिए...। बेटा पहले अपने मौलिक कर्तव्य तो जान लो.... फिर अधिकार लेना....।
ठीक है.... दादा जी बताइये।
पहला – भारत के सभी नागरिक का कर्तव्य होगा कि वह संविधान का पालन करें, उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करें।
दूसरा– स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलनों को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखें और उसका पालन करें।
तीसरा– भारत की प्रभुसत्ता, एकता और अखंडता की रक्षा करना प्रत्येक नागरिक का परम कर्तव्य है।
देश की सेवा के लिए सदैव तत्पर रहे, देश की रक्षा करें।
देश के नागरिक का कर्तव्य है कि वे उन प्रथाओं का बहिष्कार करें जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हैं, साथ ही देश के विभिन्न समुदायों के बीच सामंजस्य और समन्वित संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्व समझें और उनका परीक्षण करें।

शाबाश बेटी, सातवां कर्तव्य– प्रकृति, पर्यावरण की रक्षा, संवर्धन करें, प्राणी मात्र के प्रति दया भाव रखें।
आठवां कर्तव्य– देश के नागरिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाएं तथा मानववाद व अन्वेषण व सुधार की भावना का विकास करें। नौवां कर्तव्य– सार्वजनिक संपत्ति जैसे–सरकारी बिल्डिंग, परिवहन के साधन आदि की रक्षा करें एवं हिंसा से दूर रहें।
दसवां कर्तव्य– नागरिक व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों से सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करें।
और ग्यारहवां कर्तव्य हम बच्चों के लिए ही है.. इसके अनुसार अभिभावकों का यह कर्तव्य होगा कि वे अपने से 6 से 14 वर्ष की आयु के बच्चों को शिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्रदान करें।
दादू यह सब कर्तव्य हमने सुने और हम यह प्रण करते हैं कि हर स्थिति में इन कर्तव्यों को हम निभाएंगे और इनको भूलेंगे नहीं।

दादा जी अब हमारे मौलिक अधिकार भी बता दीजिए।
हां भाई क्यों नहीं, अब बारी हमारे मौलिक अधिकारों की.... पहला अधिकार है– समानता का अधिकार।
हां और दूसरा अधिकार स्वतंत्रता का अधिकार है।
तीसरा अधिकार शोषण के खिलाफ अधिकार।
और चौथा अधिकार है धर्म की स्वतंत्रता का अधिकार।
पांचवा सांस्कृतिक का शैक्षिक अधिकार। छठवां अधिकार है संवैधानिक उपचारों का अधिकार।
वाह क्या बात है दादू।
तो बच्चो! आज हम लोग 26 नवंबर को संविधान दिवस इसी लिए बनाते हैं क्योंकि यह दिन हमको याद दिलाता है कि हम कितने महान गणतंत्र के एक अंग हैं, विश्व का सबसे बड़ा लिखित संविधान हमको प्रेरणा देता है, हम सभी को अपने देश पर गर्व है। बच्चो.... एक साथ बोलो.... जय हिन्द!

प्रधानमंत्री ने स्वच्छ भारत को बापू और देश की जनता को समर्पित किया

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 2 अक्टूबर, 2019 को स्वच्छ भारत को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और देश की जनता को समर्पित किया।

गुजरात के अहमदाबाद में साबरमती रिवरफ्रंट पर आयोजित एक विशाल सार्वजनिक कार्यक्रम में हिस्सा लेने के लिए देश भर से पहुंचे 20,000 स्वच्छाग्रहियों एवं सरपंचों को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि स्वच्छ भारत मिशन (एसबीएम) के तहत एक सघन व्यवहार परिवर्तन कार्यक्रम के माध्यम से खुले में शौच करने वाले लोगों की संख्या साल 2014 में 60 करोड़ से घटकर आज नगण्य हो गई है। उन्होंने कहा कि दुनिया में खुले में शौच करने वाले लोगों के 60 प्रतिशत हिस्से को कम करके भारत ने एसडीजी 6 की वैश्विक उपलब्धि में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

उन्होंने कहा कि 2 अक्टूबर, 2019 को एक साफ और खुले में शौच से मुक्त (ओडीएफ) भारत महात्मा गांधी को उनकी 150वीं जयंती पर सच्ची श्रद्धांजलि है। उन्होंने स्वच्छता को एक जन-आंदोलन बनाने के मिशन के आह्वान पर लाखों स्वच्छाग्रहियों द्वारा किए गए कार्यों को सलाम किया और इस जन आंदोलन को लेकर अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए सभा को झुककर नमन किया।

प्रधानमंत्री ने कहा कि इस आयोजन के साबरमती रिवरफ्रंट पर होने के अपने मायने हैं, क्योंकि इसी साबरमती आश्रम में बापू ने सत्याग्रह और स्वच्छाग्रह, दोनों के लिए अपना जीवन खपाया। इस संदर्भ में उन्होंने कहा कि स्वच्छाग्रह की सफलता इतिहास को दोहरा रही है, यह बहुत कुछ सत्याग्रह की सफलता की तरह है, क्योंकि ये दोनों ही जन भागीदारी के सिद्धांत पर आधारित थे।

प्रधानमंत्री ने रेखांकित किया कि यह उपलब्धि स्वच्छ भारत की दिशा में महज एक कदम है, जो अब तक हुई प्रगति पर ध्यान केंद्रित करने के साथ ही एक सतत प्रक्रिया होगी और यह सुनिश्चित करेगी कि कोई भी पीछे न छूटे। उन्होंने कहा कि जल जीवन मिशन इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम होगा।

सरकार ने इसके लिए 3.5 लाख करोड़ रुपये आवंटित करने का फैसला किया है। उन्होंने कहा कि भारत के लोगों को एकल उपयोग वाले प्लास्टिक का चलन रोकने के लिए एक साथ काम करने की आवश्यकता है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि समूचा अंतरराष्ट्रीय समुदाय अब स्वच्छता के एक सफल मामले के अध्ययन के रूप में भारत को उदाहरण के तौर पर देख रहा है। उन्होंने कहा कि गेट्स फाउंडेशन द्वारा भारत को दिए गए ग्लोबल गोलकीपर अवॉर्ड ने भारत को स्वच्छता के क्षेत्र में एक वैश्विक नेता के रूप में विश्व मानचित्र पर मजबूती से खड़ा कर दिया है।

इस अवसर पर अपने स्वागत भाषण में गुजरात के मुख्यमंत्री श्री विजय रूपाणी ने स्वच्छता को लेकर प्रधानमंत्री द्वारा दिखाई गई प्रतिबद्धता और देश भर में इस मिशन को लागू करने के लिए सरकार द्वारा किए गए नेतृत्व की सराहना की। उन्होंने कहा कि इस मिशन की सफलता का सार्वजनिक स्वास्थ्य, सुरक्षा एवं गरिमा पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा और यह दुनिया के लिए अनुकरणीय उदाहरण के तौर पर स्थापित होगा।

इस कार्यक्रम की शुरुआत के बाद से ही भारत में ग्रामीण स्वच्छता के दायरे में जबरदस्त वृद्धि हुई है। यह अक्टूबर 2014 में 39 प्रतिशत से बढ़कर सितंबर 2019 में 100 प्रतिशत हो गया है। इस मिशन के तहत 10 करोड़ से ज्यादा घरों में शौचालयों का निर्माण हुआ है। इसके परिणामस्वरूप 35 राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों, 699 जिलों और 599,963 गांवों ने खुद को खुले में शौच से मुक्त घोषित किया है।

इस अवसर पर गुजरात में 20,000 से ज्यादा सरपंच और स्वच्छाग्रही (गामीण इलाकों में प्रेरक) जुटे। मुख्य कार्यक्रम से दो दिन पहले (30 सितंबर से 1 अक्टूबर) 20,000 प्रतिभागी 'गांधी ट्रेल' में शामिल हुए और स्टैच्यू ऑफ यूनिटी एवं दांडी नमक सत्याग्रह स्मारक का दौरा किया। इसके साथ ही ये लोग जल एवं स्वच्छता के क्षेत्र में गुजरात द्वारा विभिन्न जगहों पर अपनाई जा रही सर्वश्रेष्ठ प्रक्रियाओं के भी गवाह बने।

लोगों को संबोधित करने से पहले प्रधानमंत्री ने स्वच्छ भारत प्रदर्शनी का अवलोकन किया और स्वच्छता गीत एवं स्वच्छ भारत लेजर फिल्म जारी की। उन्होंने बापू की 150वीं जयंती के अवसर पर स्मारक डाक टिकट एवं सिक्के जारी किए और इस मिशन में असाधारण योगदान के लिए 11 स्वच्छ भारत पुरस्कार प्रदान किए। ❑

लड़ाकी पड़ोसन

–नासिरा शर्मा

गंगा किनारे पेड़ों का झुंड था। बूढ़े पेड़ खोखले हो चुके थे। बस एक नीम का पेड़ था जो हरा-भरा था। उसकी मोटी सी डाल पर मैना का घोंसला था। उसी नीम के पास बबूल के पेड़ पर कौए का घर था। मैना और कौए की बस जान-पहचान थी। मैना को कौआ पसंद नहीं था। वह बेसुरा और बकवास करने वाला पक्षी था। कई बार उसकी कांव-कांव सुनकर मैना की नींद खराब हो जाती थी। जब मैना अपना घर मोम से बना रही थी तो कौआ नमक से अपना घर बना रहा था। यह देखकर मैना हंस पड़ी और मजाक उड़ाते हुए बोली, "बरसात का मौसम सिर पर है और तुमको पता नहीं कि...। कौआ चिढ़ कर बोला, "तू लड़ाकी बहुत है। मेरा घर है जैसा चाहूं बनाऊं। तू कौन होती है टांग अड़ाने वाली?"

मैना कम न थी फौरन बोल पड़ी, ''मूर्ख तो तुम हो! यह जानकर मैं तुम्हारी हर बार सहायता करती हूं मगर अब नहीं करूंगी।"

"अपने काम से काम रखो! मेरा दिमाग मत चाटो।" कौए ने पंख फड़फड़ाए।

"इनका तो रोज़ का किस्सा है।" मैना की सात बहनें चीखती हुई नीम की डाल पर आन बैठी। उसके बाद हुदहुद आई। वह कुछ न बोली और पक्की निमकौली पर ठोंग मारने लगी।

गर्मी बड़ी तेज़ थी। लू के थपेड़े चल रहे थे। धूप की तेजी

ने मैना के मोम के घर को एक तरफ से पिघला दिया। यह देखकर कौए को हंसी आ गई। मैना उसकी तरफ बिना देखे अपने घर की मरम्मत में लग गई। शाम होते-होते ज़ोर की आंधी आई और अचानक टप...टप करके बूंदें पड़ने लगीं। मैना ने आंधी के कारण पहले ही खिड़की-दरवाज़े बंद कर रखे थे। इसलिए उसे पता नहीं चल पाया कि कौए का घर पानी की पहली बौछार में ही जगह-जगह से टपकने लगा और एक समय ऐसा आया कि दीवारें भी गल गईं और कौआ तेज़ बारिश में भीगता बैठा रहा।

कौआ कब तक भीगता और पत्तों में छुपता। लगातार भीगने से उसको जाड़ा भी लगने लगा था। कंपकंपी सी लग गई। मन कहा, "मूर्ख तो तू है मगर घमंडी मत बन! जा जाकर मैना के घर रात गुज़ार ले वरना कांपते-कांपते डाल से नीचे गिरेगा और हड्डी-पसली तुड़वा बैठेगा...। दिमाग कहता, "खबरदार! जो तुम गए। कुछ घंटों की बात है। सूरज निकल आएगा। अपने पंख सुखा लेना।" कौआ कांप रहा था। पंख फड़फड़ा कर पानी झटक रहा था मगर बारिश रुकने का नाम नहीं ले रही थी। एक समय ऐसा आया कि हवा का तेज झोंका बहा तो ऐसा लगा जैसे कि उसका एक पैर डाल पर से फिसला और वह सचमुच नीचे गिरते-गिरते बचा। उसने न दिन की सुनी न दिमाग की और उड़ कर किसी तरह नीम के पेड़ पर जा बैठा। पत्तियां पेड़ की घनी थीं। यहां बारिश का जोर भी कम था। वह डाल पर पंजे दबाता हुआ धीरे-धीरे मैना के घर की तरफ बढ़ा। मैना का चेहरा उसकी आंखों के सामने चमका तो उसका हौसला कम होने लगा। उसने बार-बार आंखें साफ कीं और हिम्मत कर मैना का दरवाजा खटखटाया।

अंदर से मैना की सहमी आवाज़ आई, "कौन?"

कौए की आवाज़ हलक में अटक गई। जवाब देते न बना। मैना इस आंधी-तूफान से खुद घबराई हुई थी। सोचने लगी कि तेज हवा से किवाड़ बज रहा है। तभी फिर दरवाजे पर थाप पड़ी।

"कोई है!" मैना कहती हुई आगे बढ़ी और दरवाजे के छेद से बाहर झांका तो वहां कुछ सूझ नहीं रहा था सिवाए अंधेरे के...। वह वहीं खड़ी रही।

"मैना बहन दरवाज़ा खोलो।" कौए की कंपकपाती आवाज सुनाई पड़ी।

"क्यों? इतनी रात को भला कोई किसी के घर आता है?" मैना ने फटकार लगाई।

"बड़े कष्ट में हूं... घर तो बारिश में घुल गया।" कौआ रुआंसा हो उठा। मैना को जैसे इसी दुर्घटना का इंतज़ार था। उसने दरवाज़ा खोला। कौए का हाल देख वह अपनी हंसी न रोक पाई।

"हंस लो! मगर मुझे अंदर आने दो!'' अपमान का घूंट पी कौए ने हाथ जोड़ कर कहा।

मैना ने जाने क्या सोच कर दरवाज़ा खोल दिया।

"मुझे बस सोने भर की जगह चाहिए।" कौए के स्वर में विनती थी।

"मेरे पास जगह कहां है?" मैना ने तड़ से कहा।

"अरे! इतना बड़ा घर है? मैं रसोई में सो जाऊंगा।"

"क्या बात करते हो। वहां तो बस...। अब क्या कहूं... सामान ही सामान भरा है।" फिर पंजा नचा कर बोली, "तेरा वहां कौन सा ठिकाना?"

"तो फिर मुझे... अपनी पलंग पर पायताने पर सोने दो।" कौआ कंपकपाते हुए बोला।

"अरे मैं सोऊं! मेरे बच्चे सोएं... तेरा वहां कौन सा ठिकाना!" मैना ने मटक कर कहा।

"मैं पलंग के नीचे सो लूंगा।" खुशामद से कौआ बोला।

"अरे वहां कहां? वहां भी सामान! तेरा वहां कौन-सा ठिकाना?" मैना ने मुंह बनाया।

कौआ यह जवाब सुन अवाक रह गया और समझ गया कि मैना इस संकट की घड़ी में भी उसका

मज़ाक उड़ाना नहीं भूली है। कुछ पल वह वहां खड़ा रहा फिर भीगे पंख समेट कर जाने का मुड़ा। मन ही मन बोला, "आज के बाद न मैं घर बनाऊंगा न किसी के घर कभी शरण मांगने जाऊंगा।"

बाहर बारिश भी फुआरों में बदल चुकी थी। वह नीम की निचली डाल पर पंजे संभाल-संभाल कर उतरा और वहीं दम साध कर बैठ गया। पानी से भीगने से उसे बुखार आ गया था। सारा बदन दर्द से टीस रहा था। इस हालत में भी उसे नींद आ गई।

बारिश सुबह होते-होते रुक गई थी मगर सूरज नहीं निकला था। माहौल में नमी के साथ उमस भी थी। मैना जब घर में झाड़ू लगाते-लगाते बाहर निकली तो उसकी नज़र अचानक सोए कौए पर पड़ी तो उसे हंसी आ गई। "नमक का घर बना कर बैठे थे कौए जी!" उसकी हंसी धीरे-धीरे तेज़ हो गई जिससे कौए की आंख खुल गई।

"यह मैना की बच्ची मुझे चैन से यहां रहने नहीं देगी। पेड़ ही नहीं, मैं यह जगह छोड़ दूंगा।"

बारिश ने सभी पक्षियों के घरों को क्षति पहुंचाई थी। सभी अपने गिरे-टूटे घरों से निकल कर एक-दूसरे का कुशलक्षेम ले रहे थे। किसी पक्षी ने कौए को बेहाल बैठा देखा तो सहानुभूति दिखाते हुए पूछा, "भैय्या रे! तेरा तो ठिकाना ही उजड़ गया।" यह सुनकर कौआ मुस्कुराया।

"अब हर जगह तो मिलावट है। घर तो मज़बूत बनाया था। जाड़ा, गर्मी झेल गया था मगर...।"

"यह मूर्ख है! नमक और पानी एक साथ रह सकते हैं क्या? बरसात के लिए तो अलग से तैयारी करनी पड़ती है।" मैना ने हाथ मटकाया तो इस बार कौए को गुस्सा आ गया और वह चीख पड़ा, "कांव... कांव अपने को बड़ा चतुर समझती हो न। अगर बारिश न आती तो गर्मी से जो तेरा घर का हिस्सा पिघला था। उसकी जगह पूरा घर पिघल जाता।" कौए ने कटाक्ष भरे स्वर में कहा।

"अगर वह आदमी मोटी डाल काट कर न ले जाता तो धूप में इतनी हिम्मत न होती कि वह मेरे घर का हिस्सा पिघला देती।" मैना ने गुस्से में कहा।

"यह बड़ी लड़ाका है। इसके साथ रहना अब कठिन है।" कौए ने रुष्ट स्वर में कहा।

"तो फिर कहां जाओगे?"

"वहां जहां पक्षियों का दिल नर्म हो। उनमें भाईचारा हो! प्यार हो।" कौआ बोला।

"ऐसी जगह तो अब बाकी बची नहीं है सिवाए पहाड़ पर जाकर संन्यास लेने के।" मैना इतना कह कर अपने घर का दरवाजा बंद कर लिया। कौए को ताव तो बहुत आया मगर वह चुप रहा और सबसे विदा ले वह भूखा-प्यासा उड़ गया।

बस्ती पहुंच कर उसने सबसे पहले दो घूंट पानी टूटे नल से पिया और जाकर हलवाई की दुकान के शेड पर बैठ गया। हलवाई जैसे ही मुड़ा उसने थाल से एक जलेबी चोंच में दबाई और बिजली के टूटे खंबे पर जा बैठा। पूरी जलेबी खा ली और चोंच को साफ कर उसने इधर-उधर देखा और सोचने लगा कि बस्ती में रहना उचित रहेगा, अगर पेड़ पर जाता हूं तो किसी न किसी से मुठभेड़ हो जाएगी। ऐसा सोच कर वह ठिकाना ढूंढने निकला। कुछ दूर पर एक गंदा नाला बह रहा था। उसी के पास एक टूटा घर दिखा जो बिना छत के था, जिसके सामने कूड़ा भरा था, कौए ने खंडहर में झांका। वहां कोई न था। टूटी टीन का एक कौना सीढ़ी के ऊपर दिखा तो कौए को लगा कि यही जगह पनाह लेने के लिए अच्छी रहेगी। खुशी-खुशी वह चहका "कांव... कांव...। पानी भी है। बस्ती में खाने का आराम भी है और किसी लड़ाकी पड़ोसन का साथ भी नहीं है।"

वह टीन के नीचे घुसा और आराम से पैर पसार कर लेट गया। थोड़ी देर बाद वह गहरी नींद में डूब गया। ❑

-डी-37/754, छतरपुर पहाड़ी,
एसएसएन मार्ग, नई दिल्ली-74

गुरु ग्रंथ साहिब

–महीप सिंह

सिख विचारधारा ने अपने समय के धर्म और समाज व्यवस्था को सर्वथा नई दिशा दी। भक्ति, ज्ञान, उपासना, शास्त्र-अध्ययन, आध्यात्मिक चिंतन, दार्शनिक वाद-विवाद को एक सीमित परिधि से निकाल कर समाज के उस वर्ग के बीच पहुंचा दिया जो इससे पूरी तरह वंचित था।

प्राचीन काल से ही इस देश में जो व्यवस्था विकसित हुई थी उसमें आध्यात्मिक ज्ञान पर एक वर्ग का एकाधिकार था। इस चिंतन के लिए जिस भाषा का उपयोग होता था, वह भी जनसामान्य की भाषा नहीं थी। ब्राह्मण वर्ग संस्कृत को छोड़कर किसी भी प्राकृत भाषा में संवाद करना अपना अपमान समझता था और वर्ण व्यवस्था के कारण शास्त्र अध्ययन सभी के लिए स्वीकार्य नहीं था।

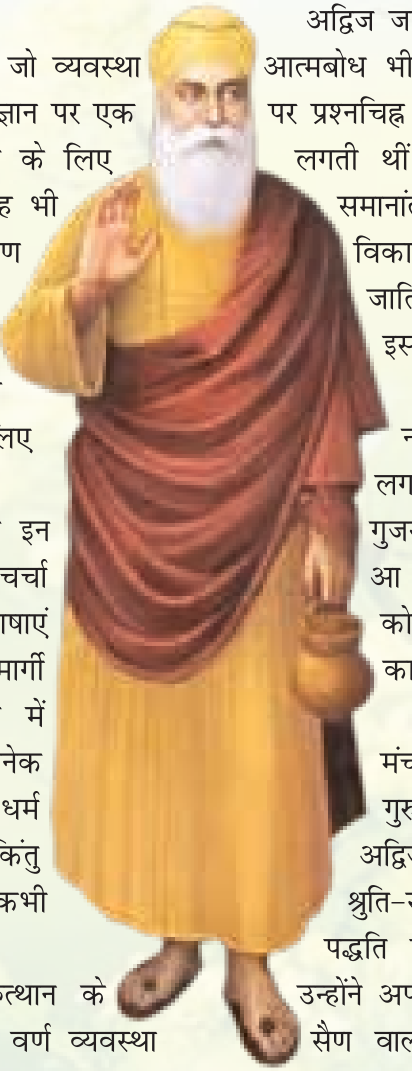

संभवत: सबसे पहले बुद्धदेव ने इन वर्जनाओं का त्याग किया। ज्ञान-चर्चा के लिए संस्कृत का स्थान जन-भाषाएं लेने लगी। शास्त्रमार्गी और लोकमार्गी धाराओं का यह टकराव इस देश में अनेक शताब्दियों तक चलता रहा। अनेक शताब्दी तक इस देश में बौद्ध धर्म का व्यापक प्रभाव दिखाई दिया किंतु श्रुति-स्मृति धारा का अपना वर्चस्व कभी शिथिल नहीं पड़ा।

देश में भागवत धर्म के पुनरुत्थान के साथ इतना अंतर अवश्य आया कि वर्ण व्यवस्था और श्रुति-सम्मत पथ का आग्रहशील वर्ग भी निम्न जातियों को भक्ति के क्षेत्र में प्रवेश करने की अनुमति देने को तैयार हो गया। किंतु धार्मिक प्रबंधन पूर्ववत था। निम्न जातियां भक्त हो सकती थीं, ज्ञानी नहीं।

अद्विज जातियों में भक्ति के प्रवेश ने उनमें आत्मबोध भी जगाया और वे उन सभी बातों पर प्रश्नचिह्न लगाने लगे जो उन्हें भेदभाव पूर्ण लगती थीं। श्रुति-स्मृतिमार्गी भक्तिधारा के समानांतर उन्होंने अपनी भक्तिधारा का विकास किया और उन सभी वर्गों और जातियों को अपने साथ जोड़ लिया जो इस संसार से पूरी तरह टूटे हुए थे।

द्रविड़ प्रदेश में यह स्वर नवीं-दसवीं शताब्दी में ही उभरने लगा था। फिर यह स्वर महाराष्ट्र और गुजरात से होता हुआ उत्तर भारत में आ गया और 'जाति पाति पूछै नहिं कोई, हरि को भजै सो हरि का होई' का उद्‌घोष सभी ओर गूंजने लगा।

किंतु इस स्वर को एक सबल मंच देने का कार्य पंजाब में हुआ। गुरु नानक देव तथा परवर्ती सिख गुरु अद्विज जातियों में से नहीं आए थे, किंतु श्रुति-स्मृतिमार्गी असमानता मूलक जीवन पद्धति को उन्होंने स्वीकार नहीं किया। उन्होंने अपने आपको नामदेव, कबीर, धन्ना, सैण वाली परंपरा से जोड़ा। यह परंपरा

गुरु ग्रंथ साहिब में संगृहित रचनाएं वर्षों से बिना किसी परिवर्तन के पूरी तरह सुरक्षित हैं। बीसवीं शती में जब संत कबीर की रचनाओं की खोज की जाने लगी तो इसमें संगृहित उनके 'पद' और 'सलोक' ही सबसे अधिक प्रामाणिक माने गए। शेख फरीद की रचनाएं पंजाबी में होने के कारण सूफी परंपरा से ओझल-सी

परमशक्ति को निर्गुण-निराकार मानती है, मूर्तिपूजा और अवतारवाद को अस्वीकार करती है, देव स्थान, तीर्थयात्रा तथा वे सभी कर्मकांड जो श्रुति-स्मृतिमार्गी भक्ति के आवश्यक अंग थे को नकार देती है। स्वानुभूत अनुभव को वह किसी भी शास्त्र से अधिक मान्यता देती है, केवल भक्ति ही नहीं, वरन अध्यात्म और दर्शन क्षेत्र के सभी चिंतन और ज्ञान में निम्नतर समझी जाने वाली जाति का पूरा हस्तक्षेप स्वीकार करती है, यहां तक कि वह विधर्मी का भी इस संवाद में दोनों बाहें फैलाकर स्वागत करती है। यह कार्य श्रुति-स्मृतिमार्गी भक्ति में स्वीकृत नहीं था।

गुरु ग्रंथ साहिब में इन संतों की वाणियों को स्थान मिला। इसमें अवतारवादी संत भी हैं, किंतु अपनी उदार दृष्टि के कारण वे नीची समझी गई श्रेणियों में भी स्वीकृत हैं। जयदेव और रामानंद इसके उदाहरण हैं। गुरु ग्रंथ में संगृहित सभी 15 संतों के कुल 778 पद हैं। इन संतों में जयदेव, रामानंद, परमानंद और सूरदास, पीपा, त्रिलोचन, शेख फरीद कबीर और भीखण मुसलमान तथा नामदेव, रविदास, साधना, सैण, धन्ना, वेणी शमिल हैं। इनमें सबसे अधिक पद (541) कबीरदास के, फिर शेख फरीद (122), नामदेव (60) और रविदास (40) पद हैं।

थीं। उन्हें भी मान्यता प्राप्त होने का सबसे प्रमुख कारण उनका इस ग्रंथ में प्राप्त होना है। यही बात नामदेव और रविदास के संबंध में भी कही जा सकती है।

इस ग्रंथ में शामिल अनेक संत ऐसे हैं जिन्हें आज केवल उन्हीं पदों से याद किया जाता है जो इस ग्रंथ में हैं। साधना, वेणी, पीपा, सैण, धन्ना, भीखण, परमानंद इस ग्रंथ के माध्यम से ही स्मरण किए जाते हैं। महाराष्ट्र के संत नामदेव की पंजाब में बहुत प्रसिद्धि है और स्थान-स्थान पर उनके केंद्र बने हुए हैं। इसका स्रोत भी गुरु ग्रंथ साहिब में संगृहित उनके 60 पद हैं। वे पंजाब और महाराष्ट्र के बीच निरंतर संवाद की सबसे मजबूत कड़ी हैं। इस ग्रंथ में संगृहित होने के कारण ही पंजाब तथा संसार के अनेक भागों में रविदासी गुरुद्वारे बने हुए हैं, जिनमें रविदास के पदों का उसी प्रकार कीर्तन होता है जिस प्रकार इस ग्रंथ में संगृहित अन्य गुरुओं, भक्तों और सूफियों की रचनाओं का। वर्षों पहले ऐसे किसी ग्रंथ के निर्माण की परिकल्पना अपने-आप में एक अद्‌भुत बात थी। ❑

–प्रकाशन विभाग की पुस्तक 'गुरु नानक से गुरु ग्रंथ साहिब तक' से साभार

चींचीं ने उड़ना सीखा

–वीना सुखीजा

गौरैया अपनी छोटी सी प्यारी बिटिया चींचीं को उड़ना सीखा रही है।

गौरेया–चींचीं बेटी डरो मत। घोंसले से बाहर कूदो।

चींचीं–मम्मा बहुत डर लग रहा है। बहुत तेज हवा चल रही है। अगर मैं सीधे जमीन में गिर गई तो... तुम्हारी प्यारी बेटी का क्या होगा?

गौरेया–नहीं गिरते बेटी। हम पक्षियों को कुदरत का वरदान हासिल है। हम हवा से जमीन में नहीं गिरते।

चींचीं–लेकिन मम्मा मुझे तो उड़ना नहीं आता न। मैं तो गिर जाऊंगी न। आप तो नहीं गिरोगी।

गौरेया–नहीं बेटी आप भी नहीं गिरोगी। हमारे लिए हवा पानी की तरह है। हम उड़ते नहीं हवा में तैरते हैं। जैसे–मछलियां पानी में तैरती हैं।

चींचीं–लेकिन मम्मा मैं तो छोटी हूं। मैंने तो अभी उड़ने का अभ्यास नहीं किया। मैं तो गिर जाऊंगी न...।

गौरेया–नहीं बेटे मैं भी जब तुम्हारी जितनी छोटी थी तो मैं भी नहीं गिरी थी।

चींचीं–मम्मा तो क्या आपकी मम्मा ने भी आपको इतने छोटे में उड़ने के लिए कहा था।

गौरेया–हां, बेटे चिड़ियों के बच्चों को जन्म के कुछ दिनों बाद उड़ना ही पड़ता है, तभी वे दुनिया में जिंदा रहते हैं और जीते हैं।

चींचीं–लेकिन मम्मी मुझे तो बहुत डर लगता है।

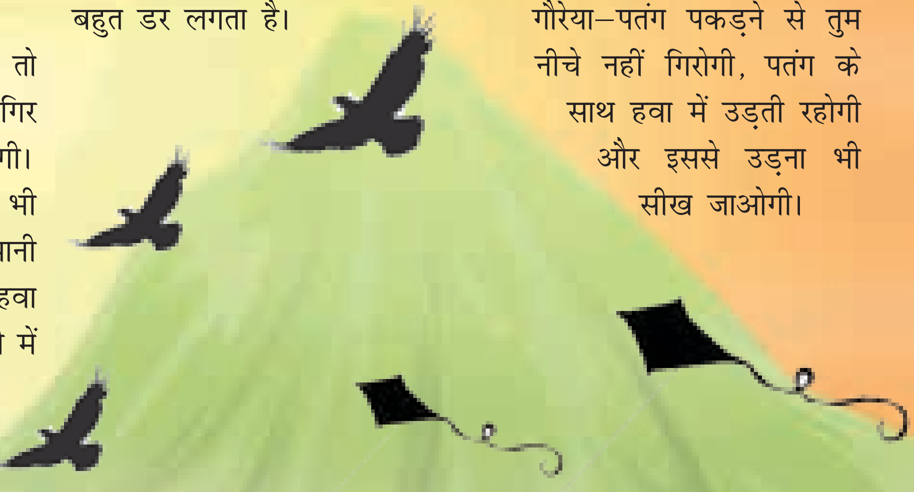

गौरेया–अच्छा तो मैं तुम्हें डरने से बचने के लिए एक उपाय बताती हूं।

चींचीं–बताओ मम्मी।

गौरेया– वह देखो पतंगे उड़ रही हैं न।

चींचीं–हां मम्मी।

गौरेया–ऐसा करो ये पतंग जो हमारे घोंसले के पास आ रही है, तुम इसको मुंह से पकड़ लेना और फिर इसी के साथ पंख फड़फड़ाने लगना।

चींचीं– मम्मी इससे क्या होगा?

गौरेया–पतंग पकड़ने से तुम नीचे नहीं गिरोगी, पतंग के साथ हवा में उड़ती रहोगी और इससे उड़ना भी सीख जाओगी।

चींचीं–मम्मी ये तो बड़ा अच्छा *आइडिया* है।

गौरेया– हां, मम्मा के पास हमेशा बड़े अच्छे *आइडिया* होते हैं।

चींचीं–तो क्या मम्मा तुमने भी पतंग के साथ उड़ना सीखा था।

गौरेया– नहीं, बेटे। मैं तो अपनी मम्मी के कहने पर यूं ही अपने छोटे-छोटे पंख फैलाकर घोंसले से कूद गई थी और उड़ने लगी थी।

चींचीं–तो फिर मम्मी आप मुझे पतंग पकड़ने को क्यों कह रही हो?

गौरेया–क्योंकि तुम्हें बहुत डर लग रहा है।

चींचीं–तो मम्मी क्या मैं डरपोक बच्ची हूं।

गौरेया–नहीं, तुम बहुत बातूनी हो मेरी अच्छी बच्ची। लेकिन अब बातें नहीं, अब जैसा कहती हूं वैसा करो।

चींचीं–ठीक है मम्मी। मैं पतंग मुंह से पकड़ती हूं।

गौरेया–हां, वह देखो एक पतंग बिल्कुल नीचे की तरफ हमारे घोंसले के पास आ रही है, चलो तुम इसको पकड़ो...। शाबाश मेरी बच्ची।

चींचीं– मम्मी मैंने पकड़ लिया ...। मम्मी मजा आ रहा है। मैं तो हवा में उड़ रही हूं मम्मी।

गौरेया–हां, मेरी बच्ची ऐसे ही उड़ो खूब मजा आएगा। डरो मत।

चींचीं– वाह, मम्मी मुझे तो बहुत मजा आ रहा है। मैं तो हवा में उड़ रही हूं। लेकिन अरे... अरे ... अरे...! मम्मा पतंग तो छूट गई।

गौरेया–कोई बात नहीं मेरे बच्चे लेकिन तुम तो उड़ रही हो न।

चींचीं... अरे हां, मैं तो यह भूल ही गई कि मैं उड़ रही हूं...। मम्मा मैं तो बिना पतंग के भी उड़ रही हूं। वाह... वाह... वाह! मैं तो आसमान से बात कर रही हूं! शुक्रिया मम्मी! तुमने मुझे हवा में उड़ना सीखा दिया। अब मैं बहुत खुश हूं।

गौरेया–हां, बेटे हवा में उड़ना सीखकर हर कोई बहुत खुश होता है। अब तुम आजाद हो। अब तुम कहीं भी उड़कर जा सकती हो। अब तुम अपनी खुशियों का आनंद लो... और उड़ो... और उड़ो? ❑

सद्दुआएं लीजे

—बाबूराम शर्मा 'विभाकर'

बेटी पढ़ाइयेगा,
बेटी बचाइयेगा,
पढ़-लिख कर उसको,
सामर्थ्यवान कीजे।
अपनी ही बिटिया की
सद्दुआएं लीजे।।
बिटिया के जब आप
पीले हाथ करोगे।
गौरव ही होगा तब
ऊंची बात करोगे।
घर द्वार रीझेगा,
आस-पड़ोस रीझे।
अपनी ही बिटिया की
सद्दुआएं लीजे।
जीवन की सब दिशाएं,
महक रहीं, चहक रहीं।
धरती पर अम्बर में-
सेवा से गमक रही।
ससुराली घर में भी
गौरव कीजे।
अपनी ही बिटिया की
सद्दुआएं लीजे।

—52/2, लाल क्वाटर्स, गाजियाबाद-201001

चुनमुन खरगोश और स्मार्ट फोन

–शिवचरण चौहान

चुनमुन खरगोश ने जब से नया स्मार्ट फोन खरीदा था उसके तमाम नए दोस्त बन गए थे। मुनमुन बकरी, कालू कुत्ता, कालिया कौवा, खोंखों बंदर, थुलथुल भैंस, गुनगुन भौरा, चालू चिड़िया, ननमुन तितली, हिन्नू हिरण, हिन-हिन घोड़ा और न जाने कौन-कौन। चुनमुन खरगोश के पास फेसबुक या व्हाट्सएप पर बहुत से नए-अनजान लोगों की *फ्रेंड-रिक्वेस्ट* आती, वह सब को ओके कर देता।

वह जब स्कूल जाता तो चुपचाप अपना फोन भी ले जाता। अब उसका ध्यान पढ़ने में कम, दोस्तों के चैटिंग, गेम या बातचीत करने में ही ज्यादा लगा रहता। मम्मी समझातीं-चुनमुन, अब तुम पढ़ाई में मन नहीं लगाते हो। दिन-रात फोन पर टिक-टिक लगे रहते हो। टिक-टिक पहले पढ़-लिखकर कुछ बन जाओ तब खूब फोन पर बातें करना।

पर चुनमुन खरगोश, मम्मी की बात भला क्यों मानने लगा। वह बहाना बनाकर फिर फोन में बिजी हो जाता।

मुनमुन बकरी, बड़े प्यारे-प्यारे शेर, कविताएं पोस्ट करती, हरी-हरी घास के मैदान के नजारे, चुनमुन खूब लाइक करता।

कालू कुत्ता अपनी बहादुरी के रोज नए-नए किस्से सुनाता तो कालिया कौवा कांव-कांव ही करता रहता। चालू चिड़िया और ननमुन तितली, हिन्नू हिरन, अपनी नई-नई फोटो, पिक्चर पोस्ट कर सैकड़ों लाइक बटोरते।

चुनमुन खरगोश दिन भर फोन पर ही लगा रहता। किसी से तो घंटों बातें ही करता रहता। इस कारण उसका होमवर्क भी पिछड़ जाता। मम्मी-पापा, टीचर सबसे झूठ बोलकर वह बच निकलता और पढ़ने-लिखने के नाम पर फोन में ही मस्त रहता।

सभी दोस्तों ने लंबी-लंबी डींगे हांक रखी थीं। प्यारे दोस्त चुनमुन, जब कोई समस्या हो, एक कॉल कर देना या एक पोस्ट डाल देना तुरंत हाजिर हो जाएंगे।

चुनमुन इन्हीं सब के साथ मस्त रहता और खाने-पीने, पढ़ने तक भी

कभी-कभी उसको सुध न रहती।

एक दिन चुनमुन पार्क में एक पेड़ के नीचे बेंच में बैठे-बैठे अपनी किसी दोस्त के साथ चैटिंग कर रहा था कि भूखे खालू भेड़िया ने उसे देख लिया। गोलमटोल चुनमुन खरगोश को देखकर उसके मुंह में पानी आ गया। वह घात लगाकर चुनमुन पर हमला करने ही वाला था कि अचानक पत्ते खड़कने से चुनमुन की नजर खालू पर पड़ी। चुनमुन दौड़कर पास ही एक पेड़ के खोखले तने के बिल में जा घुसा। उसने फौरन कालू कुत्ते को फोन किया- 'कालू जल्दी आ जाओ मुझे खालू भेड़िए ने घेर लिया है।'

"अरे यार, आज मुझे सुबह से ही जुकाम-बुखार है। मैं लेटा हूं। तुम किसी और दोस्त को कॉल कर के बुला लो" कहकर कालू कुत्ता बहाना बना गया। चुनमुन ने फिर मुनमुन बकरी को फोन किया "मुनमुन बहन, तुम्हारी सींगें चाकू की तरह तेज हैं न! तुरंत पार्क में आ जाओ और खालू भेड़िए को मारकर भगा दो, वह मुझ पर हमला करने वाला है।"

"अरे ऐसा करो चुनमुन कि तुम किसी और दोस्त को बुला लो मैं अपने बच्चों के लिए नाश्ता बना रही हूं।" मुनमुन बकरी भी झूठ बोल गई।

"अरे हिन-हिन दादा, मैं संकट में हूं, चुनमुन ने हिन-हिन घोड़े को फोन लगाया- खालू भेड़िया मुझे पकड़ना चाहता है। मेरी गदद करो"

"मैं अभी रेस कम्पटीशन में जा रहा हूं, लौटकर आऊंगा तो फोन करूंगा", कहकर हिन-हिन घोड़े ने फोन काट दिया।

चुनमुन ने एक-एक कर अपने सारे दोस्तों को फोन किया। मैसेज डालें। व्हाट्सएप किया। पर उसकी मदद को कोई नहीं आया। दोस्ती के बड़े-बड़े दावे करने वाले दोस्तों ने या तो बहाने बना दिए या फोन काट दिया या स्विच ऑफ कर लिया।

खालू भेड़िया पेड़ के पास ही भटक रहा था। वह तने के भीतर बार-बार पंजा डाल रहा था लेकिन चुनमुन उसके हाथ नहीं आ रहा था। चुनमुन के लिए ज्यादा देर वहां टिके रहना भी संभव नहीं था। उसे टीचर की एक बात याद आ गई थी। टीचर ने क्लास में एक दिन कहा था- सभी को अपनी मदद खुद करनी चाहिए। संकट में घबराना नहीं चाहिए।

उसने तुरंत अपना फोन खालू भेड़िए के सिर पर दे मारा और उछलकर भाग खड़ा हुआ। उसने अपने पापा से रेसिंग सीखी थी, वह काम आई। वह छलांगें भरता हुआ इतनी तेज भागा कि खालू भेड़िया सर पकड़े आंखें फाड़े उसे देखता ही रह गया। ❑

-मनेथू, कानपुर, देहात-209121

बिंदु मिलाओ

-पूजा रानी, सी-8ए, चंदर विहार, दिल्ली

उपन्यास

पीटर पैन

यह क्या हुआ?

प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित उपन्यास प्रसिद्ध लेखक जेम्स मैथ्यू बेरी के मूल उपन्यास *पीटर पैन* का हिंदी रूपांतर है। इस उपन्यास का विश्व की अनेक भाषाओं में अनुवाद हुआ है। इसका रूपांतर *रमेश तैलंग* ने बड़ी सहज और सरल भाषा में किया है।

गतांक से आगे...

पीटर पैन तोप के गोले का शिकार होने से बच गया है। स्मी बोला, "हो सकता है, अभी वह कुछ देर और इस तरफ न आए।"

तब तक परी टिंकर बैल वैंडी को अपने साथ लिए हुए उस स्थान पर आ पहुंची जहां पीटर पैन के साथी बच्चे अपने गुप्त ठिकाने में छिपकर रहते थे। वे गुप्त छेदों के ज़रिए कैप्टिन हुक और स्मी की बातें सुन रहे थे और उन्हें देख रहे थे। जब कैप्टिन हुक टिक-टिक घड़ियाल के डर से भाग गया तो गुप्त घर में छिपे बच्चों की जान में जान आई। वे पेड़ों के खोखले तनों में बने दरवाज़ों से होकर बाहर निकल आए और आकाश की ओर देखने लगे। वही तो रास्ता था पीटर पैन का। वह दुनिया में घूमने-फिरने के बाद आकाश मार्ग से उड़कर ही नेवरलैंड लौटा करता था। पीटर पैन के साथियों का मन कह रहा था कि बस वह आने ही वाला है।

लेकिन कुछ गड़बड़ हो गई थी। पीटर पैन और वैंडी अलग-अलग हो गए थे। यह बस हुक और दूसरे डाकुओं द्वारा आकाश में उड़ते पीटर पैन पर छोड़े गए तोप के गोले के कारण हुआ था। परी टिंकर बैल

वैंडी के साथ आगे निकल आई थी। उसने वैंडी को परेशानी में डालने की एक योजना बनाई थी। इसलिए वह वैंडी को लिए तेज़ी से उड़ी आ रही थी। टिंकर बैल चाहती थी कि जैसे भी हो वह वैंडी को लेकर पीटर पैन से पहले नेवरलैंड के द्वीप पर पहुंच जाए। वह जानती थी कि अगर पीटर पैन या वैंडी के भाई साथ रहे तो फिर वह अपनी योजना पर अमल नहीं कर पाएगी। इसलिए वह बहुत तेजी से उड़ रही थी। वैंडी को लिए हुए टिंकर बैल उस स्थान पर आ पहुंची जहां टूटल्स, निब्स, जुड़वां-1, जुड़वां-2 तथा स्लाइटी और कर्ली खड़े हुए आशा भरी दृष्टि से आकाश में देख रहे थे। टिंकर बैल तो नन्ही-सी थी। उसकी तुलना में वैंडी का शरीर बहुत बड़ा था। आकाश में इधर-उधर उड़ रहे दूसरे परिंदों से भी बड़ा।

तभी निब्स ने कहा–"अरे देखो, देखो, आकाश में यह कैसा विचित्र पक्षी उड़ रहा है।" वह वैंडी को विचित्र पक्षी कह रहा था। स्लाइटी ने देखा तो वह भी बोला–"अरे हां, इतना बड़ा पक्षी तो इससे पहले मैंने कभी नहीं देखा।"

"कौन-सा पक्षी है यह?" कर्ली ने भी जानना चाहा।

"तब तक वैंडी और टिंकर बैल और भी निकट आ पहुंची थीं। टिंकर बैल वैंडी से अलग होकर बच्चों के निकट आ गई। फिर बोली–"सुनो, ध्यान से सुनो पीटर पैन का आदेश!"

"पीटर पैन का आदेश? पर वह है कहां? तुम दोनों तो हमेशा साथ-साथ रहते हो।"

"वह सब बाद में पूछना। ध्यान से देखो आकाश में उड़ती हुई लड़की को?" टिंकर बैल ने कहा। वह वैंडी की ओर संकेत कर रही थी।

"यह कौन है? क्या आकाश में उड़ता हुआ बड़ा परिंदा।" बच्चों ने पूछा।

"हां, वही, वह अच्छी नहीं है। तुम्हें नुकसान पहुंचा सकती है। पीटर का आदेश है कि इसे नीचे मत उतरने दो। इसे तीर से मार गिराओ"–टिंकर बैल ने कहा। हालांकि वैंडी पास ही उड़ रही थी, पर यह बात टिंकर ने परियों की बोली में कही थी–इसलिए वैंडी को केवल घंटियों की टन-टन सुनाई दी।

भला टूटल्स, निब्स तथा उनके दूसरे साथी पीटर पैन के आदेश की अवहेलना कैसे कर सकते थे। उन्हें ज़रा भी संदेह नहीं हुआ कि टिंकर बैल परी झूठ भी बोल सकती है। उस समय केवल टूटल्स के हाथ में तीर-कमान थे। वह वैंडी पर निशाना साधने लगा। टिंकर बैल ध्यान से देखती हुई सोच रही थी–कोई-न-कोई तीर तो वैंडी को लगेगा ही। वह फिर चिल्लाई–"तीर छोड़ो और छोड़ते रहो। जल्दी करो।"

टूटल्स ने आकाश में उड़ती वैंडी पर निशाना साधा और तीर छोड़ दिया। वैंडी गोल-गोल घूमती हुई तेज़ी-से नीचे आने लगी, फिर धरती पर गिर पड़ी–वहीं, जहां पीटर पैन के साथी खड़े थे।

जिस समय टूटल्स ने वैंडी पर तीर चलाया तो टिंकर बैल जाकर छिप गई। इस समय वह वहां मौजूद नहीं रहना चाहती थी क्योंकि उसे मालूम था, पीटर पैन पहुंचने ही वाला होगा।

टूटल्स गर्वीले भाव से ज़मीन पर पड़ी वैंडी के निकट खड़ा था। वह मन-ही-मन बहुत खुश था कि उसने पीटर पैन के आने से पहले ही उसका बताया काम पूरा कर दिया था।

वैंडी को ज़मीन पर गिरते देख टूटल्स के बाकी साथी भी वहां पहुंच गए। वे डरी हुई नज़रों से यह सब देख रहे थे और सोच रहे थे- कहीं कुछ गलत तो नहीं हो गया क्योंकि अब तो परी टिंकर बैल भी कहीं नहीं दिखाई दे रही थी। आखिर पीटर पैन अभी तक क्यों नहीं आया था। यह आकाश में उड़ने वाली लड़की कौन थी जो नेवरलैंड आ

पहुंची थी। वह यहां क्यों आई थी?

सब तरफ खामोशी थी। वैंडी ज़मीन पर अचेत पड़ी थी। क्या वह मर चुकी थी? कोई कुछ नहीं समझ पा रहा था, किसी की हिम्मत वैंडी के पास खड़े होने की नहीं हो रही थी। पहले टूटल्स अपने कारनामे पर खुश हो रहा था, पर अब लग रहा था कि कहीं कुछ गलत तो नहीं हो गया।

स्लाइटी ने कहा– "अरे, यह तो एक लड़की है, कोई परिंदा नहीं।"

"एक लड़की–हां।" टूटल्स ने कांपते स्वर में कहा। असल में तो वह टिंकर बैल की बात ठीक से समझ नहीं पाया था और उसने हड़बड़ी में वैंडी पर तीर चला दिया था।

कर्ली ने कहा– "पीटर पैन ने मुझसे कहा था कि वह हमारे लिए मां लेने जा रहा है।"

जुड़वां–1 ने कहा– "हां, मां जो हमें कहानियां सुनाने वाली है, लेकिन...अब...?"

"अब क्या... मुझसे तो टिंकर बैल ने तीर चलाने को कहा था..." टूटल्स बोला। "पता नहीं क्या होगा।"

जब ये बातें हो रही थीं पीटर पैन की आवाज़ सुनाई दी। मुर्गा बोल रहा था। असल में यह पीटर पैन का संकेत था। जब वह नेवरलैंड वापस आता तो मुर्गे की बोली बोलकर सबको सूचित करता था।

"इसे छिपा दो। जल्दी करो, कहीं पीटर पैन इसे देख न ले। पता नहीं टिंकर बैल भी कहां चली गई है। उसी ने तो टूटल्स से तीर चलाने को कहा था।" अब आपस में कहने लगे।

तभी मुर्गे की बांग फिर सुनाई दी और पीटर पैन आकाश से नीचे उतर आया।

पीटर पैन ने सबकी ओर देखा,

उसके साथी एकदम खामोश खड़े थे। ऐसा तो कभी नहीं होता था। जब वह घूम-फिरकर नेवरलैंड लौटता था तो वहां रहने वाले सब बच्चे बहुत खुश हो जाते थे। लेकिन आज वे सब खामोश थे। पीटर पैन को लगा कहीं कुछ गड़बड़ है।

बच्चे चुप खड़े थे।

पीटर पैन ने कहा—"मैं तुम सबके लिए एक अनोखा उपहार लेकर आया हूं। एक मां लाया हूं जो तुम्हें रात के समय कहानियां सुनाएगी।"

लेकिन इस बार भी बच्चे कुछ नहीं बोले।

पीटर ने पूछा—"क्या तुमने वैंडी को देखा है क्योंकि हम रास्ते में एक-दूसरे से अलग हो गए थे।" पर अपने इस प्रश्न का भी उसे कोई उत्तर नहीं मिला।

"पीटर, मैंने..." यह टूटल्स की आवाज़ थी... "मैंने उस पर तीर चलाया था, क्योंकि टिंकर बैल ने कहा था।"

बच्चे अब तक ज़मीन पर पड़ी वैंडी को घेरे हुए थे, इसलिए वह दिखाई नहीं दे रही थी। पर टूटल्स के बोलते ही बच्चे एक तरफ हट गए और पीटर पैन की आंखें ज़मीन पर पड़ी वैंडी पर टिक गईं। "यह क्या..." उसके मुंह से निकला और वह दौड़कर वैंडी के पास जा पहुंचा, फिर झुककर बैठ गया। वैंडी की आंखें बंद थीं। उसने वैंडी के शरीर में धंसा तीर निकालकर फेंक दिया। फिर अपने साथियों की ओर देखा तो टूटल्स घुटनों के बल झुक गया। उसकी आंखों में आंसू थे।

पीटर पैन का चेहरा गुस्से से लाल हो उठा। उसने देखा चोट ज्यादा गहरी नहीं थी, गिरने के कारण वैंडी बेहोश हो गई थी।

टूटल्स ने कहा—"तीर मैंने चलाया था लेकिन..."

"शैतान!" पीटर चिल्ला उठा।

"मुझे दंड दो पीटर"—टूटल्स ने कहा, "मैंने बहुत बड़ा अपराध किया है।"

एकाएक सब चौंक गए। क्या यह सच था कि वैंडी ने अपना हाथ ऊपर उठाया था? क्या वह जीवित थी? "देखो, देखो, लगता है वह मरी नहीं है", निब्स ने ज़ोर से पुकारा।

हां, तीर से घायल होने के बाद भी वैंडी मरी नहीं थी, शायद वह जीवित थी।

"हमारी मां जीवित है-" स्लाइटी ने कहा।

यह तो चमत्कार ही हो गया था। असल में तीर का सिरा वैंडी के गले में लटकते लाकेट के गोल पेंडेंट से टकरा कर छिटक गया था और खाल की ऊपर सतह में ज़रा-सा घाव लगा था। इसलिए उसके प्राण बच गए थे।

उधर वैंडी को जीवित देखकर परी टिंकर बैल परेशान हो गई। उसका षड्यंत्र असफल हो गया था।

टूटल्स ने पीटर को बता दिया कि कैसे टिंकर बैल ने उसको वैंडी पर तीर चलाने को कहा था।

पीटर पैन ने कहा—"टिंकर बैल तुमने बहुत गलत काम किया है। अब से मेरी तुम्हारी दोस्ती खत्म।"

"नहीं, नहीं ऐसा मत कहो।" टिंकर बैल ने दु:खी स्वर में कहा। "मुझसे भारी गलती हो गई। मुझे क्षमा कर दो।"

कर्ली बोला—"हमें वैंडी को अपने गुप्त ठिकाने पर ले चलना चाहिए। कहीं डाकू हुक आ गया तो मुश्किल हो जाएगी।"

"लेकिन वैंडी घायल है। वह अपने-आप पेड़ के तने में बने गुप्त मार्ग से नीचे नहीं जा सकती", पीटर बोला "अभी उसे यहीं लेटी रहने दो। क्यों न हम वैंडी के आसपास एक नया घर बना दें। इस तरह उसे उठने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी।"

इतना सुनते ही सब बच्चे सक्रिय हो गए। वे आपस में कह रहे थे—"हम वैंडी के लिए नए घर का निर्माण कर देंगे। चलो साथियो, काम में लग जाओ।" ❑

—क्रमशः

भारतीय फिल्मों के पितामह
दादा साहेब फाल्के

–मानस

हम सबके प्यारे, सदी के महानायक अमिताभ बच्चन जी को साल 2018 के दादा साहेब फाल्के पुरस्कार देने की घोषणा की गई है। यह पुरस्कार भारत सरकार की तरफ से दिया जाने वाला वार्षिक पुरस्कार है जो किसी व्यक्ति को भारतीय सिनेमा में उसके योगदान के लिए दिया जाता है। अमिताभ बच्चन जी हिंदी सिनेमा के सबसे लोकप्रिय अभिनेता हैं। 1970 से अब तक लगभग 200 फिल्मों में काम कर चुके हैं। उन्हें तीन राष्ट्रीय और 12 फिल्मफेयर पुरस्कार मिल चुके हैं। उनके नाम सर्वाधिक सर्वश्रेष्ठ अभिनेता फिल्मफेयर अवार्ड का रिकार्ड है। 2001 में भारत सरकार ने उन्हें कला क्षेत्र में पद्म भूषण से भी सम्मानित किया है। अभिनय के अलावा अमिताभ बच्चन जी पार्श्वगायक, फिल्म निर्माता, टीवी प्रस्तोता और सांसद भी रहे हैं। उनका प्रसिद्ध टीवी शो 'कौन बनेगा करोड़पति' तो हम लोग खूब देखते ही हैं।

वैसे अमिताभ बच्चन जी के बारे में तुम लोग बहुत कुछ जानते होंगे। पर उन्हें जो पुरस्कार दिया जा रहा है, यानी दादा साहेब फाल्के– उसके बारे में तुम लोग शायद ही जानते हो। यह पुरस्कार भारतीय फिल्म उद्योग के पितामह कहे जाने वाले दादा साहेब फाल्के के नाम पर दिया जाता है। इस पुरस्कार का प्रारम्भ दादा साहब फाल्के के जन्म शताब्दी–वर्ष 1969 से हुआ। उस वर्ष राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार के लिए आयोजित 17वें समारोह में पहली बार यह सम्मान अभिनेत्री देविका रानी को दिया गया था। तब से अब तक यह पुरस्कार साल के अंत में या अगले वर्ष के आरंभ में 'राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार' के लिए आयोजित समारोह में प्रदान किया जाता है। वर्तमान में इस पुरस्कार में 10 लाख रुपये और स्वर्ण कमल दिए जाते हैं।

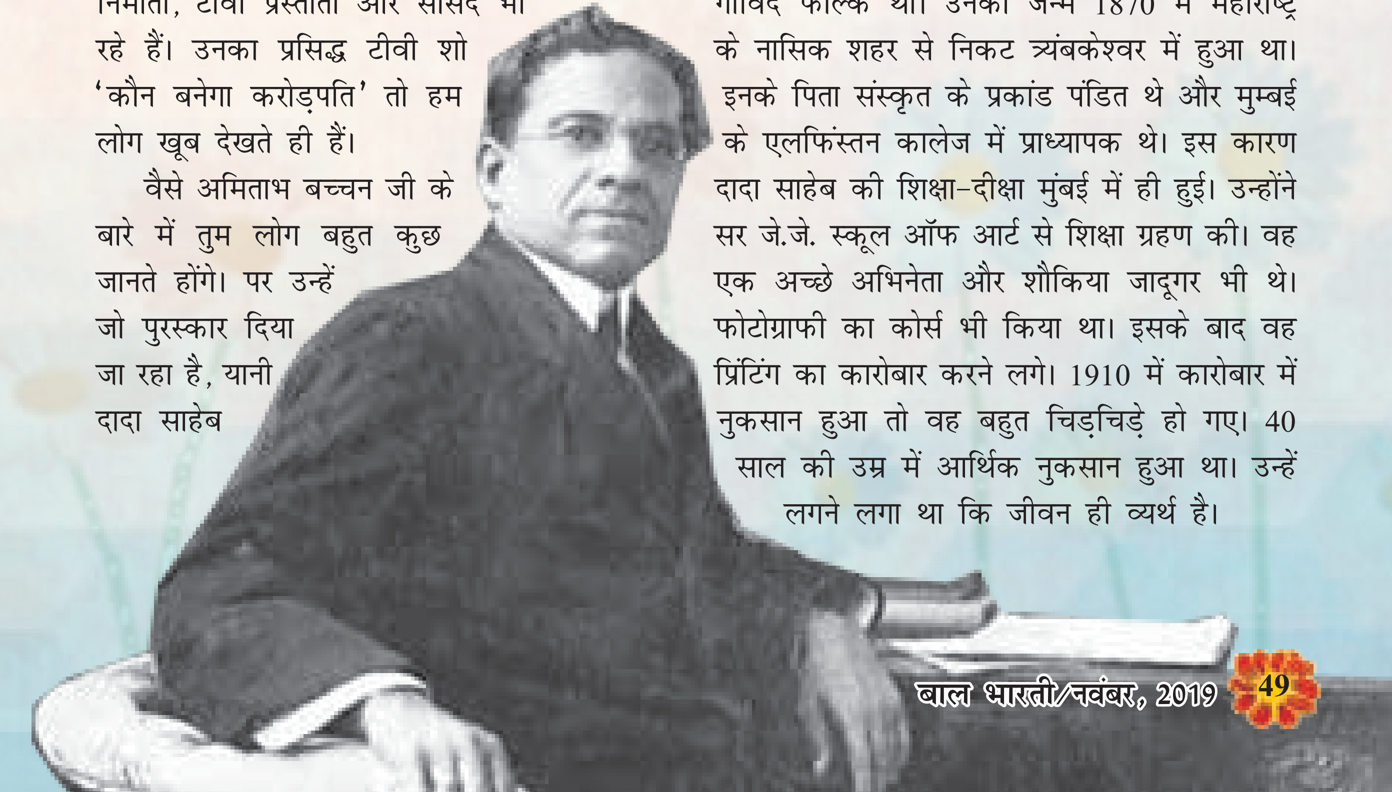

कौन थे दादा साहेब फाल्के

दादा साहेब फाल्के का असली नाम धुंडिराज गोविंद फाल्के था। उनका जन्म 1870 में महाराष्ट्र के नासिक शहर से निकट त्र्यंबकेश्वर में हुआ था। इनके पिता संस्कृत के प्रकांड पंडित थे और मुम्बई के एलफिंस्तन कालेज में प्राध्यापक थे। इस कारण दादा साहेब की शिक्षा–दीक्षा मुंबई में ही हुई। उन्होंने सर जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट से शिक्षा ग्रहण की। वह एक अच्छे अभिनेता और शौकिया जादूगर भी थे। फोटोग्राफी का कोर्स भी किया था। इसके बाद वह प्रिंटिंग का कारोबार करने लगे। 1910 में कारोबार में नुकसान हुआ तो वह बहुत चिड़चिड़े हो गए। 40 साल की उम्र में आर्थिक नुकसान हुआ था। उन्हें लगने लगा था कि जीवन ही व्यर्थ है।

फिर भी हिम्मत बरकरार रखने की कोशिश करते रहे। इसी दौरान क्रिसमस के मौके पर उन्होंने ईसामसीह पर बनी एक फिल्म देखी। यह एक मूक फिल्म थी। इसे देखने पर उन्हें एहसास हुआ कि उनकी जिंदगी का मकसद फिल्मकार बनना है। उन्हें लगा कि रामायण और महाभारत जैसे पौराणिक महाकाव्यों से फिल्मों के लिए अच्छी कहानियां मिलेंगी। उनके पास सभी तरह का हुनर था। वह नए-नए प्रयोग करते थे। अत: प्रशिक्षण का लाभ उठाकर एक और नया प्रयोग किया। वह 5 पौंड में एक सस्ता कैमरा खरीद लाए और शहर के सभी सिनेमाघरों में जाकर फिल्मों का अध्ययन और विश्लेषण किया। फिर दिन में 20 घंटे लगकर प्रयोग किए।

इस प्रयोग का असर दादा साहेब की सेहत पर पड़ा। उनकी एक आंख जाती रही। उस समय उनकी पत्नी सरस्वती बाई ने उनका साथ दिया। पत्नी ने अपने जेवर गिरवी रख दिए। उनके अपने मित्र ही उनके पहले आलोचक थे। अत: अपनी कार्यकुशलता को सिद्ध करने के लिए उन्होंने एक बर्तन में मटर बोई। फिर इसके बढ़ने की प्रक्रिया को एक समय में एक फ्रेम में खींचकर साधारण कैमरे से उतारा। इसके लिए उन्होंने टाइमैप्स फोटोग्राफी की तकनीक इस्तेमाल की।

ऐसे बनी पहली मूक फिल्म

1912 में दादा साहेब ने फिल्म प्रोडक्शन में एक क्रैश कोर्स करने के लिए इंग्लैंड जाने का फैसला किया। वहां उन्होंने ब्रिटिश फिल्म निर्माता-निर्देशक सिसिल हेपवर्थ के साथ एक हफ्ता काम किया। इसके बाद उन्होंने लंदन में बाइस्कोप वीकली के संपादक की मदद से फिल्म बनाने का कुछ सामान खरीदा और 1912 में मुंबई वापस आ गए। मुंबई में दादर में उन्होंने अपना स्टूडियो बनाया और फाल्के फिल्म के

नाम से अपनी संस्था स्थापित की। लगभग आठ महीने की मेहनत से उन्होंने अपनी पहली मूक फिल्म 'राजा हरिश्चंद्र' का निर्माण किया। मूक फिल्म यानी जिसमें कोई डायलॉग नहीं था। चूंकि उस समय फिल्में बनाना किसी को नहीं आता था, इसलिए दादा साहेब ने खुद ही फिल्म के सीन्स लिखे, फोटोग्राफी की और प्रोडक्शन का काम भी खुद ही किया। फिल्म में हरिश्चंद्र बने दत्तात्रय दामोदर दबके और दादा साहेब के सात साल के बेटे भालचंद्र फाल्के ने हरिश्चंद्र के बेटे रोहिश्व की भूमिका निभाई।

फिल्म की पूरी शूटिंग दिन में होती थी क्योंकि दादा साहेब फिल्म के फुटेज को रात में डेवलप और प्रिंट करते थे। करीब छह माह में 3700 फीट की लंबी फिल्म तैयार हुई। 21 अप्रैल, 1913 को कोरोनेशन सिनेमा हॉल में इसे रिलीज किया गया। भारत की पहली फिल्म को दर्शकों ने हाथों-हाथ लिया। यह फिल्म जबरदस्त हिट रही। इस फिल्म के बाद दादा साहेब ने 'मोहनी भस्मासुर' की कहानी पर फिल्म बनाई। इसमें दुर्गाबाई कामत और कमलाबाई गोखले ने काम किया और वे हिंदी सिनेमा की पहली और दूसरी अभिनेत्रियां कहलाईं। फिर दादा साहेब ने 'सत्यवान सावित्री' पर फिल्म बनाई। ये दोनों फिल्में भी 'राजा हरिश्चंद्र' जैसी सफल रहीं। 1915 में अपनी इन तीन फिल्मों के साथ दादा साहेब लंदन गए। लंदन में इन फिल्मों की बहुत प्रशंसा हुई।

लोकमान्य तिलक ने भी की थी फाल्के की मदद

पहले विश्वयुद्ध के दौरान दादा साहेब को फिल्म निर्माण के लिए आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। कोई भी फिल्म में पैसा लगाने को तैयार न था। तब लोकमान्य तिलक ने दादा साहेब की मदद करने का फैसला किया। उन्होंने जनता से अपील की कि फाल्के की आर्थिक मदद की जाए। इस अपील का असर हुआ और फाल्के ने 'लंका दहन' जैसी फिल्म बनाई।

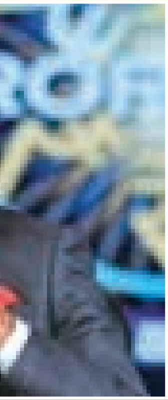

दादा साहेब ने अपने जीवन काल में कुल 125 फिल्मों का निर्माण किया। कोल्हापुर नरेश के आग्रह पर 1937 में दादा साहेब ने अपनी पहली और अंतिम टॉकी फिल्म 'गंगावतरण' बनाई। ढाई लाख रुपए की लागत से यह फिल्म करीब दो साल में बनकर तैयार हुई। उस दौरान टॉकी फिल्में खूब हिट हो रही थीं। 1931 में पहली टॉकी फिल्म 'आलम आरा' आ चुकी थी। व्ही. शांताराम जैसे फिल्मकार हिट फिल्में बना रहे थे जिसमें आम लोगों की कहानियां थीं। इसलिए दादा साहेब की धार्मिक फिल्म 'गंगावतरण' लोगों को पसंद नहीं आई और फिल्म फ्लॉप रही।

इसके बाद दादा साहेब ने फिल्मों से संन्यास ले लिया। 16 फरवरी, 1944 में 74 वर्ष की अवस्था में नासिक में उनका देहांत हो गया। भारत सरकार उनकी याद में हर साल फिल्म जगत की किसी विशिष्ट शख्सियत को दादा साहब फाल्के पुरस्कार देती है। अब तक 49 लोगों को यह पुरस्कार मिल चुका है जिनमें छह महिलाएं हैं।

दादा साहेब ने अपने करियर की शुरुआत गोधरा, गुजरात में फोटोग्राफर के तौर पर की थी। लेकिन उन्हें यह काम बीच में छोड़ना पड़ा, क्योंकि वहां प्लेग की बीमारी फैली और इसमें उनकी पहली बीवी और बच्चे का देहांत हो गया।

दादा साहेब जादूगर भी थे। जर्मन जादूगर कार्ल हर्ट्स से मिल चुके थे जो दुनिया में पहली फिल्म बनाने वाले लुमियर ब्रदर्स के साथ काम कर चुके थे।

दादा साहेब ने मशहूर चित्रकार राजा रवि वर्मा के साथ भी काम किया था।

पहली फिल्म 'राजा हरिश्चंद्र' के लिए दादा साहेब की पत्नी ने कौस्ट्यूम्स तैयार किए थे। वह फिल्म में कार्य रही टीम के लिए खाना भी पकाती थीं।

'राजा हरिश्चंद्र' में हरिश्चंद्र की बीवी तारामती के लिए दादा साहेब को कोई महिला न मिली। कोई महिला फिल्म में काम करने के लिए तैयार न थी। तब उन्हें तारामती के लिए एक पुरुष को चुना। इस कलाकार का नाम अन्ना सालुंके था जोकि एक रेस्तरां में बावर्ची था।

लंदन के वॉल्टन स्टूडियो में दादा साहेब ने नौकरी का प्रस्ताव ठुकरा दिया था क्योंकि वह अपने देश में अपनी संस्कृति-धर्म पर फिल्में बनाना चाहते थे। ❑

–बी 33 मानवस्थली अपार्टमेंट्स, वसुंधरा इन्क्लेव, नई दिल्ली.110096

पुरस्कार

–चांद 'दीपिका'

दादी का योग, ध्यान पूजा पाठ कब का समाप्त हो चुका था। व्यायाम भी हल्का-सा उन्होंने कर लिया था। पुस्तकें, बिस्तर सभी तरतीब से लग चुके थे।

कमरा भी साफ था। प्रात: नाश्ता करने के पश्चात् लिखना-पढ़ना उनका प्रतिदिन का नियम था। दादी लेखक थी। कथा, कहानी, कविता, लेख, उपन्यास सभी लिखा करती थीं।

कमरा बंद कर दादी सीढ़ियां उतर नीचे चली आई थीं। नीचे रसोई थी। सिंक से हाथ धो दादी ने चाय का पानी रखा और चाय बनाने तक आटा भी गूंध कर रख दिया। चाय बनते ही दादी ने अपने लिए दो पराठियां भी बनाईं तथा ड्राईंगरूम के सोफे पर बैठ गपागप खाने लगीं।

नाश्ता करने के पश्चात् दादी ने रसोई में जा झूठे बर्तन धोकर अलमारी में रखे। दाल, चावल साफ-सुथरे थे। उन्होंने दोपहर के खाने के लिए भिगो कर रख दिए। दादी ने ड्राईंगरूम में सफेद कागज कलम उठाकर रखे। घड़ी पर ग्यारह बज रहे थे। और यही समय उनके लिखने-पढ़ने का था।

दादी कहानी लिखने बैठी थीं। कथावस्तु उनके मस्तिष्क में तैयार थी। बस कागज कलम ले उसे अक्षर रूप में आकार देना था। कहानी लिखते-लिखते दादी कहानी में डूब चुकी थी। सहसा उन्हें लगा कि ऊपर कमरे से धमाचौकड़ी कोलाहल की आवाजें आ रही हैं। दादी कहानी लिखना छोड़ ऊपर कमरे की ओर भागी। जैसे-तैसे सीढ़ियां पार कर दादी लॉबी में पहुंची। ऊपर कमरे का दरवाजा भीतर से बंद था तथा भीतर बच्चे उनके वेड पर नाच रहे थे। दरवाजा स्लाईडिंग वाला था, शीघ्र सरकाते ही खुल गया। भीतर सभी लाईट और पंखे चल रहे थे। बेटों के बेटे-बेटियां एक ओर खड़े उनकी ओर देख रहे थे।

कमरे का सारा सामान अस्त-व्यस्त और बिखरा था। दादी का पारा सातवें आसमान पर जा पहुंचा। उन्होंने उन्हें डपट कर कहा, "आज तो आप लोग पकड़े गए। झूठ कैसे बोल पाएंगे।"

बच्चे ढीठ बनकर खड़े थे। जैसे कुछ हुआ ही न हो। दादी ने दरवाजा बंद करके आदेश दिया, "बहुत हो गया शोरशराबा... धींगा-मस्ती। आज तो सजा मिलेगी। जब तक कमरा पूरा साफ सुथरा नहीं हो जाता... आपका बाहर आना बंद।" बड़े बेटे का लड़का तेज था, उसने चिल्लाकर अपने बहन-भाइयों से कहा, "हमने कोई कमरा-वमरा साफ नहीं करना है।" सब दरवाजा सरका कर भागने की फिराक में थे। पर दादी राह में अड़ी खड़ी थी।

बच्चों ने किसी प्रकार से दरवाजा न खुलते देख और विकल्प तलाशने का प्रयास किया। बड़े बेटे के लड़के ने टेलीफोन उठा फोन करना चाहा, फोन खराब था। विकल्प फेल हो गया। खिड़की में जाली नहीं थी, उस पर से उन्होंने दूसरी छत पर कूद जाने की सोची थी, पर नीचे फर्श पर गिरने का खतरा था।

कुछ मिनट दम साधे खड़ी दादी ने अधखुले दरवाजे से झांका। बच्चे मुंह फुलाए खड़े थे। पर उनकी आंखों से हल्की परेशानी झलक रही थी। दादी भी अलग परेशान हो रही थी। शैतानों ने उनकी नाक में कब से दम कर रखा था। ऊपर के दरवाजे का लॉक खराब था। बच्चे उनकी इस कमजोरी का आए दिन भरपूर फायदा उठाया करते थे। दिन-दोपहर, सांझ-रात जब भी इकट्ठे होते कमरा खट से खोल धमाल मचाते। दादी चौबीस घंटे ऊपर कमरे में पहरा कैसे रख पाती, उन्हें सामाजिक कार्य के चलते घर से बाहर भी तो आना-जाना पड़ता था।

बच्चे शैतान थे। पकड़ में कम ही आते थे। पकड़ में आ भी जाए तो एक-दूसरे का नाम चढ़ा स्वयं भाग जाते थे। बच्चों को पाठ पढ़ाना था। सख्ती भी दिखानी थी ताकि रोज की चख-चख से छुटकारा पाया जा सके। दादी अवश हो खड़ी थी। सहसा उनके मन में विचार कौंधा। उन्होंने मीठे स्वर में बाहर खड़े-खड़े कहा, "अपराध तो सभी से होता है। मुझसे भी बचपन में होता था। दंड भी मिला करता था। पर मैं आपको दंड नहीं पुरस्कार देना चाहती हूं, जो बच्चा कमरा साफ करेगा उसे पुरस्कार मिलेगा।"

पुरस्कार की घोषणा सुनते ही विद्रोह का झंडा उठाए खड़े बच्चों के तेवर कुछ ढीले पड़े। बड़े बेटे के लड़के ने कहा, "ठीक है आप जाओ हम कमरा मिलकर ठीक करते हैं।" दादी को जैसे विश्वास न हुआ। पर बच्चों ने जैसे ही फर्श पर पड़े चद्दर-कम्बल तय करने आरंभ किए, वह नीचे आकर ड्राईंगरूम में बैठ गईं।

"नव्या तू भी आ, शाम्भवी तुम भी आओ। कमरे में तुम दोनों भी तो खेल रही थीं।"

ऊपर से बच्चों की आवाजें आ रही थीं।

"ठीक है भैय्या हम भी आती हैं।" दादी ने घड़ी देखी दिन का एक बज रहा था।

बहुएं नौकरी पर गई थीं। लंच टाईम होने का था। बच्चों का खाना नौकर ने बना रखा था। उनको खाने में देर थी। वैसे भी बच्चों ने अवकाश के कारण नाश्ता देर से ही किया था। दादी ने दाल-चावल गैस पर पकने के लिए रख दिए थे। कहानी के पृष्ठ पंखे की हवा में फड़फड़ा रहे थे। लिखने का मूड सारा भंग हो चुका था।

दादी सीढ़ियां चढ़ कमरे में पहुंची। चद्दर, कम्बल बेड पर तह किए पड़े थे। बच्चों ने अपनी समझ के अनुसार काम किया था। सुबह दादी ने अपनी पुरानी कहानियों को कहीं-कहीं से ढूंढ फाईल में सहेज कर रखी थीं। शैतान बच्चों ने कागज कहीं इधर-उधर न फेंक दिए हों, दादी फाईल को याद करके चिंता में डूबने लगी। उनकी दृष्टि सर्च लाईट बन कमरे में घूमे जा रही थी। फाईल एक कोने के पड़े सामान पर सहेज कर रखी थी। दादी प्रसन्न चित्त हल्की-फुल्की हो चली थी। कमरा खाली था। बच्चों का कहीं अता-पता न था। ❑

–गृ. क्रमांक 323 कोटली, कालोनी (रिहाड़ी कालोनी) जम्मू तवी-180005 जम्मू-कश्मीर

होगा विकास तभी

–डॉ. रामनिवास 'मानव'

बच्चो, पढ़ना बहुत जरूरी।
पर उतना ही खेल जरूरी।
ताल-मेल दोनों में होगा,
होगा व्यक्तित्व-विकास तभी।
देश-देश का ज्ञान जरूरी,
और बड़ा विज्ञान जरूरी।
ज्ञान और विज्ञान मिलेंगे,
होगा व्यक्तित्व-विकास तभी।
अधिकार-कर्त्तव्य को जानो।
जीवन-मंजिल को पहचानो।
जीवन क्या है? जब समझोगे,
होगा व्यक्तित्व-विकास तभी।
खेल-कूद को जीवन समझो,
और काम को पूजन समझो।
काम-काज की आदतें डालो,
होगा व्यक्तित्व-विकास तभी।

–571, सैक्टर-1, पार्ट-2, नारनौल-123001 (हरि.)

माथा-पच्ची

देवांशु वत्स

द कॉमन थिंग!

दोस्तो, ये चार खिलाड़ियों की तस्वीरें हैं। क्या तुम बता सकते हो कि इन चारों में कौन-सी एक बात कॉमन है?

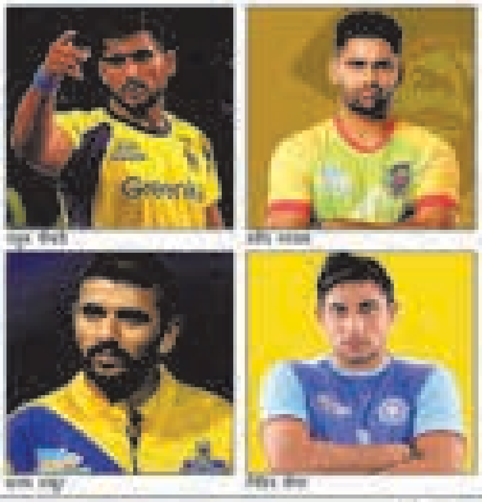

अंतर बताओ!

अगर तुमने दोनों चित्रों में दो मिनट में आठ अंतर ढूंढ निकाले, तो तुम जीनियस!

उलझ गए!

कक्षा में गोपी की ओर इशारा करते हुए नेहा रोहन से कहती है-"मैं उसके दादा के इकलौते बेटे की बेटी हूं।" रोहन को कुछ समझ में नहीं आया। पर क्या तुम बता सकते हो कि गोपी और नेहा आपस में क्या होंगे?

वार्षिक मूल्य : ₹ 160
आर एन आई 699/57
डाक रजिस्टर्ड सं. डी एल (एस) - 05/3214/2018-20
बिना पूर्व भुगतान के साथ आर.एम.एस.
दिल्ली से पोस्ट करने के लिए लाइसेंस यू (डी एन)-51/2018-20
08 अक्टूबर, 2019 को प्रकाशित • 18-19 अक्टूबर 2019 को डाक द्वारा जारी

RNI 699/57
Postal Regd. No. DL (S) - 05/3214/2018-20
Licenced U (DN) - 51/2018-20
to post without pre-payment at RMS Delhi

प्रकाशक व मुद्रक : ईरा जोशी, प्रधान महानिदेशक, प्रकाशन विभाग, सूचना भवन, सीजीओ कॉम्पलेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003
मुद्रक : **इंडिया ऑफसेट प्रैस**, ए-1, मायापुरी इंडस्ट्रियल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली। व. संपादक : आभा गौड़